श्री महावीराय नमः

जय गुरु हीरा

श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः

जय गुरु मान

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

रत्नम्

वर्ष–2, अंक–41 20 जनवरी, 2020 जोधपुर (राज.)

हिन्दी पाक्षिक पृष्ठ–40 मूल्य 5/– प्रति अंक

RNI No. RAJHIN/2015/66547

गृहस्थों का जीवन : धर्म के अनुरूप हो

धर्म के साथ में आचार–व्यवहार की जानकारी हो। कभी–कभी धर्म के साथ में व्यवहार की जानकारी नहीं होती है तो भी धर्म टिकता नहीं है। यहाँ की जानकारी तो आगे की बात है, पर दिखता है कि संसार के अन्दर धर्म और व्यवहार कितना अलग–अलग पड़ गया है। जिससे धर्म की तेजस्विता कम हो रही है, धर्म और व्यवहार में बड़ी खाई दिखाई पड़ती है। यहाँ स्थानक में आकर के धर्म ध्यान भी करते हैं, सामायिक संवर भी करते हैं, पौषध भी करते हैं, परन्तु यदि जगत्–व्यवहार में उनका व्यवहार समीचीन नहीं है तो धर्म भी कभी–कभी बदनाम हो जाता है।

युवावर्ग को धर्म में अनास्था नहीं है। उनको अनास्था है तो धार्मिकजनों के व्यवहार से। वे यहाँ सुनते कुछ और हैं और करते कुछ और हैं। सुनने और करने में अन्तर है। संसार–व्यवहार के अन्दर, घर में माता–पिता के साथ में किस तरह से व्यवहार करते हैं, भाई–भाई के साथ में किस तरह से व्यवहार करते हैं। यह व्यवहार अगर धर्म के साथ जुड़ा होता है तो आनन्द ही आनन्द होता है और धर्म के साथ नहीं जुड़कर उससे विपरीत होता है तो प्रायः अशांति, कलह एवं संघर्ष का कारण बनता है। –'मान व्याख्यान–माला' से साभार

महामंत्री की कलम से

आदरणीय रत्नबन्धुवर,

सादर जय जिनेन्द्र !

देव, गुरु धर्म के पुण्य प्रताप से आप सपरिवार स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे।

जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., सरस व्याख्यानी, महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 15 श्रीमती शरद्चन्द्रिका मोफतराज मुणोत सामायिक-स्वाध्याय भवन, पीपाड़ में सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं। परम पूज्य गुरुदेव के पीपाड़ विराजने से पीपाड़वासियों को सामायिक-स्वाध्याय एवं धर्माराधना का नियमित सुअवसर प्राप्त हो रहा है। साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा जयपुर के उपनगरों को फरसते हुए जिनशासन की प्रभावना कर रहे हैं। संत-सती मण्डल का विचरण विहार निरन्तर चल रहा है। सभी संत-सतीवृन्द विभिन्न क्षेत्रों को फरसते हुए श्रावक-श्राविकाओं को सामायिक-स्वाध्याय एवं धर्माराधना की प्रभावी प्रेरणा कर रहे हैं। जहाँ-जहाँ आचार्यप्रवर सहित मुनिमण्डल एवं महासती मण्डल का विचरण विहार चल रहा है, उन क्षेत्रों में रहने वाले गुरुभ्राताओं से निवेदन है कि आप विचरण विहार के दौरान विहार सेवा का लाभ प्राप्त करें एवं महापुरुषों से आवश्यक मार्गदर्शन एवं प्रेरणा प्राप्त करें। संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं द्वारा संचालित गतिविधियों में सक्रियता के साथ भाग लें, ऐसा विनम्र निवेदन है।

सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक इतिहास मार्तण्ड, प्रातःस्मरणीय, परम पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा. का 100 वां दीक्षा दिवस माघ शुक्ला 2, रविवार, 26 जनवरी, 2020 को उपस्थित हो रहा है। आचार्य हस्ती का दीक्षा शताब्दी वर्ष 26 जनवरी, 2020 से 13 फरवरी, 2021 तक चलेगा। इस पावन प्रसंग को सामायिक-स्वाध्याय, धर्माराधना, ज्ञानाराधना के साथ मनाने का सुअवसर रत्नसंघ को प्राप्त हो रहा है। शताब्दी वर्ष के कार्यक्रम की विस्तृत रूपरेखा रत्नम् के इसी अंक में प्रकाशित की जा रही हैं। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् की सभी शाखाओं एवं संघ की सभी सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारियों के साथ रत्न संघ के सभी समर्पित संघ सदस्यों से विनम्र निवेदन है कि निर्धारित कार्यक्रमानुसार आप अपने वहाँ पर संघ द्वारा निर्देशित कार्यक्रमों को आयोजित कर गुरु हस्ती के प्रति अपनी श्रद्धा की अभिव्यक्ति करें।

शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत पूरे भारतवर्ष में प्रतिक्रमण सीखों अभियान 26 जनवरी, 2020 से प्रारम्भ किया जा रहा है। सभी संघ सदस्य, श्राविकाएँ, युवा साथी इस अभियान में सक्रियता से स्वयं भी जुड़े तथा सम्पर्क में आने वाले संघ सदस्यों को जोड़ने का लक्ष्य रखें। संघ, श्राविका मण्डल एवं युवक परिषद् के सभी सदस्य इस अभियान में अपना सकारात्मक एवं सक्रिय सहयोग प्रदान करें।

आप-हम-सब संघ उन्नयन में सजगता एवं जागरुकता बनाये रखें, इसी मंगल मनीषा के साथ।

-धनपत सेठिया, राष्ट्रीय महामंत्री

विचरण विहार

(दिनांक 16.01.2020 की स्थिति)

☆ परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 15 श्रीमती शरद् चन्द्रिका मुणोत स्वाध्यायभवन, पीपाड़ में सुख-शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 2 मणिनगर, अहमदाबाद में सुखशान्तिपूर्वक विराज रहे हैं। अग्र-विहार वड़ोदरा की ओर संभावित है।

☆ श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 3 सामायिक-स्वाध्याय भवन, नेहरू पार्क, जोधपुर में सुखशान्ति-पूर्वक विराजमान है। जोधपुर के उपनगरों को फरसने की संभावना है।

☆ श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 2 रतनलाल सी. बाफना स्वाध्याय भवन जलगांव में सुखशान्ति-पूर्वक विराजमान है।

☆ साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 11 जैन स्थानक, प्रतापनगर, जयपुर में सुखशान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 3 स्वाध्याय भवन, महावीर कॉलोनी, पुष्कर (जिला-अजमेर) में सुखशान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 जैन स्थानक, धरण गांव, जिला-जलगांव में सुखशान्तिपूर्वक विराजमान हैं। अग्र विहार जलगांव की ओर संभावित है।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवरजी म.सा.आदि ठाणा 3 दरबार कॉलोनी, विजयनगर, जिला-अजमेर में सुखशान्तिपूर्वक विराज रहे हैं। अग्र विहार गुलाबपुरा की ओर संभावित है।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 9 महिला स्वाध्याय भवन, पीपाड़ में सुखशान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 5 सामायिक-स्वाध्याय भवन, पुष्कर रोड़, अजमेर में सुखशान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. आदि ठाणा 5 मकान नं. 16 ई 14, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर में सुखशान्तिपूर्वक विराजमान हैं। जोधपुर के उपनगरों को फरसने की संभावना है।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा 10 जैन मंदिर, केसरवाड़ी, चेन्नई में सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं। चेन्नई के उपनगरों को फरसने की संभावना है।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा 5 गायत्री नगर, जयपुर में सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं। जयपुर के उपनगरों को फरसने की संभावना है।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा 9 जैन स्थानक, जामनेर, जिला- जलगांव में सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं। अग्र विहार जलगांव की ओर संभावित है।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 राजेन्द्र भवन, जैन मन्दिर के पास, चित्रदुर्गा (कर्नाटक) में सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं। अग्र विहार बैंगलुरु की ओर संभावित है।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 माणा की ढ़ाणी, जिला जयपुर में सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं। अग्र विहार जयपुर की ओर संभावित है।

☆ सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 7 रतनलाल सी. बाफना स्वाध्याय भवन के पास, जलगांव में सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा 6 केवल वाटिका, कोंकण, जिला-दक्षिण गोवा में सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं। अग्र विहार बैंगलोर की ओर संभावित है।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 महावीर नगर, जयपुर में सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं। जयपुर के उपनगरों को फरसने की संभावना है।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 शान्तिकुंज कॉलोनी, अलवर में सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

सभी संत-सती मण्डल के रत्नत्रय की साधना में सहायक स्वास्थ्य में समाधि है तथा विचरण विहार सुख-शांति पूर्वक चल रहा है।

शांत–दांत–गंभीर, आत्मार्थी, प्रबल पुरुषार्थी पं. रत्न उपाध्यायप्रवर श्रद्धेय श्री मानचन्द्रजी म.सा. का दिनाँक 02 जनवरी, 2020 को चौविहार प्रत्याख्यान के साथ समाधिमरण

शांत-दांत-गम्भीर, प्रबल पुरुषार्थी परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. का दिनांक 02 जनवरी, 2020 को सायं लगभग 5.55 पर चौविहार प्रत्याख्यान के साथ समाधिमरण हुआ। 03 जनवरी को 11 बजे से 2.30 बजे तक शक्तिनगर, गली नं. 6 से जोधपुर में सिरे बाजार होते हुए मोक्षस्थल के लिये उनकी अंतिम यात्रा निकली, जहाँ उनकी पार्थिव देह का अन्तिम संस्कार किया गया।

संक्षिप्त जीवन-झाँकी

जन्म–तिथि : वि.सं. 1991, माघ कृष्णा चतुर्थी, दिनांक 23.01.1935

जन्म–स्थान : जोधपुर (राज.)

वीर पिता : स्व. श्री अचलचन्द जी सेठिया
वीर माता : स्व. श्रीमती छोटाबाई जी सेठिया
दीक्षा तिथि : वि.सं. 2020, वैशाख शुक्ला 13, दिनांक 06 मई, 1963
दीक्षा स्थल : सरदार स्कूल प्रांगण, जोधपुर
दीक्षा–प्रदाता : आचार्य भगवन्त परम-पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा.
सान्निध्य गुरु : पण्डित रत्न श्री बड़े लक्ष्मीचन्द जी म.सा.
उपाध्याय पद : वि.सं. 2048, प्रथम वैशाख शुक्ला नवमी, दिनांक 22.04.1991, निमाज, जिला-पाली (राज.)
चातुर्मास : पीपाड़, मेड़ता, कोसाना, अहमदाबाद, जयपुर, भोपालगढ़, जोधपुर, थांवला, पाली, विजयनगर, हरसोलाव, गोटन, विजयनगर, दिल्ली, ब्यावर, भीलवाड़ा, कोटा, कंवलियास, कोसाना, मदनगंज, सवाईमाधोपुर, जलगांव, धूले, होलनांथा, बालोतरा, सिवाना, नागौर, आदि प्रमुख शहरों सहित 57 स्थानों पर यशस्वी चातुर्मास।
समाधिमरण : **पौष शुक्ला सप्तमी, गुरुवार, दिनांक 02.01.2020, सामायिक– स्वाध्याय भवन, शक्तिनगर, जोधपुर (राज.)**
वीर परिवार : स्व. श्री भोपालचन्दजी, श्री प्रेमचन्दजी, श्री चंचलचन्दजी, श्री धनपतचन्दजी, श्री राजेन्द्रजी, श्री महेन्द्रजी नागसेठिया (भ्राता), स्व. श्रीमती पुष्पाजी चौपड़ा, श्रीमती मानकंवरजी नाहटा, श्रीमती किरण जी कोठारी (भगिनी)

जीवन–परिचय

अचल–छोटा के लाल

पूर्व जन्म की पुण्यवानी लेकर सूर्यनगरी के संभ्रान्त नागसेठिया परिवार में अनन्य गुरुभक्त सुश्रावक श्री अचलचन्दजी सेठिया के घर-आंगन में दृढ़धर्मी सुश्राविका श्रीमती छोटाबाईजी की रत्नकुक्षि से वि.सं. 1991 की माघ कृष्णा चतुर्थी को जन्म लेकर सेठिया कुल गौरव ने अपना, अपने माता-पिता और पारिवारिक-परिजनों का, सूर्यनगरी जोधपुर का, रत्नसंघ और जिनशासन का नाम रोशन किया है। सात भाई और तीन बहिनों के भरेपूरे परिवार में उनका बचपन संस्कारों से समृद्ध रहा, यौवन त्याग-वैराग्य से पुष्ट रहा, मुनि जीवन यशस्वी रहा और उपाध्याय-पद सार्थक रहा।

गुरु हस्ती के अनमोल शिष्य रत्न

इस युग के यशस्वी-मनस्वी-तपस्वी, प्रतिपल स्मरणीय, अध्यात्मयोगी, युगद्रष्टा-युगमनीषी, सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, इतिहास मार्तण्ड, चारित्र चूड़ामणि पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा. के मुखारविन्द से वि.सं. 2020 की वैशाख शुक्ला त्रयोदशी को जैन भागवती दीक्षा अंगीकार करके उस मुमुक्षु आत्मा ने

रत्नसंघ और जिनशासन की उज्ज्वल-विमल-धवल छवि को जन-जन तक पहुँचाने में महनीय पुरुषार्थ किया। मुनि 'मान' ने अपने दीक्षा-गुरु पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. एवं नेश्राय-गुरु पं. रत्न (बड़े) लक्ष्मीचन्दजी म.सा. से प्राप्त हित शिक्षाओं को जीवन-व्यवहार में चरितार्थ कर अन्त समय में व्रत-प्रत्याख्यान से समाधिमरण का वरण कर वि.सं. 2076 पौष शुक्ला सप्तमी, गुरुवार तदनुसार 02 जनवरी, 2020 को मृत्यु को महोत्सव बनाया, ऐसे साधक की सुदीर्घ संयम- साधना जैन-जैनेतर जनसमुदाय को प्रेरित करती रहेगी।

सेवा और साधना के पर्याय

मुनि जीवन में सेवा-धर्म की साधना करते हुए उस महापुरुष ने अग्लानभाव से सेवा का अनुपम आदर्श उपस्थित किया तथा अनेक चारित्रात्माओं के संयम जीवन का उन्होंने निर्माण किया। आपश्री के दर्शनमात्र से विचलित चित्त भी अविचल शान्ति का अनुभव करता था। इसीलिए तो हम उपाध्यायश्री को ''चौथे आरे की बानगी'' शब्द से सुशोभित करते हैं जो एक वास्तविकता है।

उपाध्यायश्री की सरलता, सहिष्णुता, सौम्यता, स्वाध्यायशीलता और शासन-सेवा में रचा-पचा जीवन हम-सबको आध्यात्मिक आनन्द देता था। उस महापुरुष की मधुर मुस्कान और करुणा बरसाते नेत्र दर्शन- वन्दन करने वालों को निहाल कर देते थे।

आराध्य उपाध्यायप्रवर

गुरु हस्ती ने वि.सं. 2048 की प्रथम वैशाख शुक्ला अष्टमी को तेरह दिवसीय तप-संथारे के साथ संलेखना-समाधिमरण से मृत्यु को महोत्सव बनाया, दूसरे दिन निमाज में श्रद्धांजलि-सभा में गुरु हस्ती द्वारा लिखित पत्र पढ़ा गया, जिसमें पं. रत्न श्री हीराचन्द्रजी महाराज को ''आचार्यपद'' एवं पं.रत्न श्री मानचन्द्रजी महाराज को ''उपाध्याय-पद'' का उल्लेख श्रवण कर हजारों-हजार श्रद्धालुओं में हर्ष-हर्ष, जय-जय के गगनभेदी जयनाद करके गुरु हस्ती की व्यवस्था मान्य की; तब से उस संयम-साधक ने उपाध्याय-पद का दायित्व निभाया था।

पच्चीस गुणों के धारी, अंग-उपांग के ज्ञाता, स्वमत-परमत एवं नय-निक्षेप के जानकार उस महापुरुष को न तो कोई छल सका और न ही कोई परास्त ही कर पाया। कहना चाहिए, उपाध्यायप्रवर का व्यक्तित्व-कृतित्व हम-सबके लिए सुकून देने वाला रहा है।

उपाध्यायश्री की वाक् पटुता, प्रवचन-शैली और प्रत्युत्पन्नमति से सहज-स्वाभाविक उत्तर जन-जन को सन्मार्ग की ओर अग्रसर करने वाला रहा है। हम सश्रद्धा-सभक्ति-सविनय उस महापुरुष के अनेकानेक गुणों से प्रेरित हैं, प्रभावित हैं, आकर्षित हैं अतः आज गुणानुवाद-सभा में हम उस दिव्य-दिवाकर के गुणों का अन्तर्मन से स्मरण करते हैं। उपाध्यायश्री का स्मरण हम-सबको नई ऊर्जा, नई चेतना, नई ताजगी और नई स्फूर्ति देता रहेगा।-नौरतनमल मेहता

महाप्रयाण—यात्रा

आत्मार्थी, शान्त-दान्त-गंभीर, प्रबल पुरुषार्थी उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के 02 जनवरी, 2020 को समत्वभावों के साथ स्वर्गगमन पर देश भर में विद्युत-वेग की तरह समाचार यत्र-तत्र-सर्वत्र पहुँच गए। उपाध्यायप्रवर के स्वर्ग-गमन हो जाने पर सकल जैन समाज स्तब्ध रह गया। पार्थिव देह का अंतिम संस्कार जोधपुर में होने से समीपवर्ती-सुदूरवर्ती क्षेत्रों के श्री संघ व श्रद्धालुजन जिसे जो साधन मिला, उसके माध्यम से पहुँचने का प्रयास करने लगे। 03 जनवरी को प्रातः काल से भक्तजन पहुँचने प्रारम्भ हुए तो 11 बजे के पूर्व हजारों-हजार श्रद्धालु उस दिव्य-दिवाकर को श्रद्धा-सुमन अर्पित करने आ पहुँचे। संघ के उत्साही कार्यकर्त्ताओं ने व्यवस्था बनाए रखने का प्रयास किया, लेकिन हजारों की संख्या में आए लोगों को संभालना मुश्किल प्रतीत हुआ। जन-जन के श्रद्धा के केन्द्र उपाध्यायप्रवर का पार्थिव शरीर जो सुसज्जित खण्डी में विराजित किया गया, हजारों भाई-बहिनों ने नत-मस्तक हो अपनी श्रद्धा व्यक्त की। जय-जयकारों के गगनभेदी जयनाद, भाई-बहिनों के द्वारा एवं भजन मण्डलियों ने भक्तिगीत के माध्यम से तथा बैंड की धुन के साथ प्रारम्भ हुई महाप्रयाण-यात्रा में सकल जैन समाज के ही नहीं, राजनेताओं तक ने अपनी श्रद्धा दर्शायी। पूर्व गृहमंत्री तथा वर्तमान में विधानसभा के प्रतिपक्ष नेता श्री गुलाबचन्दजी कटारिया जो प्रायः जोधपुर आने पर दर्शन-वन्दन तो करते ही थे, प्रवचन सभा में सामायिक करके बैठते थे, उन्होंने सामायिक-स्वाध्याय भवन पहुँचकर अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित किए। राजनेता के साथ स्थानीय नेता भी प्रायः आते ही है, उन्होंने भी श्रद्धाभिव्यक्ति की। केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री श्री गजेन्द्र सिंहजी शेखावत, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री सतीशजी पूनिया जैसे बड़े नेताओं ने पार्थिव देह के दर्शन कर अपनी-अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

महाप्रयाण यात्रा के प्रारम्भ होने से पावटा 'सी' रोड़ के सभी रास्ते मानो ठहर-से गए, हर वर्ग के लोगों ने स्वप्रेरित-अनुशासित यात्रा को निहारा , साथ ही दर्शन की एक झलक पाने हेतु प्रयासरत हुए।

प्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय श्री अशोकजी गहलोत उनके साथ पाली के पूर्व सांसद श्री बद्रीरामजी जाखड़ तथा स्थानीय स्तर के कांग्रेसी नेताओं ने भी महाप्रयाण-यात्रा में अपनी भागीदारी निभाई।

जोधपुर में केन्द्रीय गृहमंत्री श्री अमितजी शाह का कार्यक्रम तो था ही, साथ ही मुख्यमंत्री के विविध कार्यक्रमों के साथ हजारों लोगों के इस विशाल समूह में पुलिस-प्रशासन को व्यवस्था बनाए रखने के लिए बड़ी मशक्कत करनी पड़ी।

उपाध्यायप्रवर का जन्म जोधपुर में हुआ, दीक्षा भी जोधपुर में हुई और स्वर्गवास भी जोधपुर में होने से जैन समाज ही नहीं, जैनेतर समाज भी उनकी संयम-साधना का मुरीद रहा, इसलिए समाज के हर वर्ग ने अंतिम-यात्रा में भाग लेने में अपनी भागीदारी निभाई।-नौरतनमल मेहता

गुणानुवाद सभाओं का आयोजन

आचार्यप्रवर तथा रत्नसंघ के मुनिपुंगवों एवं साध्वीप्रमुखा आदि महासती मण्डलों के विराजने के स्थानों पर तो गुणानुवाद सभाओं के आयोजन हुए ही, साथ में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, श्री जैन रत्नयुवक परिषद् की देश भर की सभी शाखाओं के तत्त्वावधान में भी स्थानीय स्तर पर गुणानुवाद सभाओं के आयोजन हुए।

जैन समाज के प्रायः सभी सम्प्रदायों के संघनायकों के अलावा संत-मुनिराजों एवं महासतियाँजी महाराज की ओर से पत्र पीपाड़ विराजित आचार्यप्रवर एवं जोधपुर विराजित मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. की सेवा के अलावा रत्नसंघ के प्रधान कार्यालय, जोधपुर को भी प्राप्त हुए हैं। इनमें परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री रामलालजी म.सा. का बालेसर से, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री विजयराजजी म.सा. का बालाघाट से, जयगच्छाधिपति आचार्यप्रवर श्री पार्श्वचन्द्रजी म.सा. का ब्यावर से, गुरु सुदर्शन संघ के संघ संचालक श्री नरेशमुनिजी म.सा. का नरवाणा से, कवि हृदय, आगम मनीषी श्री जयमुनिजी म.सा. का मुम्बई से, मायारामीय संघ के आचार्यप्रवर श्री सुभद्रमुनिजी म.सा. का दिल्ली से, श्रमणसंघीय प्रवर्तक श्री सुकनमुनिजी म.सा. का जैतारण से, पूज्य प्रवर्तक श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा. का दिल्ली से पत्र प्राप्त हुए। मध्यप्रदेश जैन स्वाध्याय संघ-इन्दौर, श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ-जोधपुर, जैन संस्कार मंच-जोधपुर, श्री मरुधर केसरी मित्र मण्डल-जोधपुर, श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ-खारिया मीठापुर, श्री वीर लोंकाशाह संस्कृत ज्ञानपीठ-जोधपुर सहित विभिन्न संस्थाओं के पत्र भी प्राप्त हुए।

पीपाड़शहर–

रत्नसंघ के नायक आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसन-मुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी-सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 11 तथा व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 9 पीपाड़ विराजित थे, उनके सान्निध्य में 04 जनवरी, 2020 को राता उपासरा में प्रातः 9.15 से 11.30 तक गुणानुवादसभा आयोजित हुई।

सर्वप्रथम श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा.- आत्मा अजर-अमर-अविनाशी है। शरीर तो एक पुद्गल है। जीव आया और चला गया। उपाध्यायप्रवर ऐसा निर्मल संयमी जीवन जीकर चले गये। इसी कारण उन महापुरुष का स्मरण सदैव रहेगा। इस संघ को सूर्य-चन्द्र रूप दो-दो वरदहस्त प्राप्त थे। अब ये चन्द्र हमारे बीच नहीं रहे। वे सेवाभावी थे। श्रद्धेय **श्री माणकमुनिजी म.सा.** की सेवा का सुन्दर आदर्श प्रस्तुत कर गये। सहज साधक ने रागद्वेष रहित साधना की। गुरुगम्य निर्मलज्ञान के धारी रहे। उनमें निहित अनेक गुणों में से हम भी गुणों को जीवन में आत्मसात करें, वहीं अंतरंग भावना है।

संचालन संघ मंत्री **श्री सुमतिचन्दजी मेहता**- सेवामूर्ति शांत-दांत-गम्भीर, प्रबल पुरुषार्थी, परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के नाम का स्मरण प्रवचन सभा में संचालन से पूर्व वंदना करते हुए नित्य करते हुए आ रहे थे। अब वे महान् साधक हमारे बीच नहीं रहे। उन महापुरुष की शेष स्मृतियों का गुणानुवाद कर जिह्वा को पावन करे। इसी संदर्भ में आप आमंत्रित हैं-

युवारत्न श्री नमनजी मेहता- उनका जीया जीवन, सदैव जीवंत रहेगा। वे अनेक गुणों के पुंज होने से भगवन्त थे, प्रारब्ध थे। संयम-सुमेरू थे, गुणवंत थे, सरलमना शांत थे, साधना के सजग प्रहरी रहे। लाखों में एक संत थे। चौथे आरे की बानगी थे, संघ के अतिशय पुरुष थे। सारणा-वारणा-धारणा युक्त आगम कण्ठस्थ थे। कम शब्दों में सबकुछ कहने की कला में निष्णात थे। असाधारण विषयों पर भी सम्यक् समाधान फरमाया करते। ऐसे महापुरुष को श्रद्धा के साथ कोटिशः नमन।

श्री पंकजजी कोठारी- प्रभु महावीर के शासन के अमर सेनानी परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर के गुणों का स्मरण कर रहे हैं। वे सरलता की प्रतिमूर्ति थे। यों तो भारत भूमि पर एक से बढ़कर एक संत हुए है, पर उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा।

श्री नेमीचन्दजी कांकरिया- उपाध्यायप्रवर शांत-दांत-गम्भीर आदि अनेक गुणों के धारक थे। उनके गुणों को जीवन में धारण करें। हमारे लिये यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

श्री धनपतजी मेहता- जब भी मैं चौथे पद को बोलता, सहज ही उपाध्याय-प्रवर की सुन्दर छवि स्मृति पटल पर उभर आया करती। उनके प्रति श्रद्धा से मस्तक झुक जाता। वास्तव में वे केवली नहीं पर केवली सरीखे महापुरुष थे।

श्राविका मण्डल की राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष **श्रीमती बीनाजी मेहता**- रत्नसंघ से जोड़ने में परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर का उपकार रहा है। सर्वप्रथम आपके श्रीमुख से गुरु आम्नाय ली। आपने स्वाध्याय व ज्ञानार्जन की रूचि जगाई। उन्हीं की कृपा से स्वाध्याय का क्रम बराबर चल रहा है। वे वास्तव में महान् थे। ''गुरुवर मान महान् थे, जिनशासन की शान थे। त्यागी और वैरागी उत्तम साधु की पहचान थे।''

श्रावकसंघ के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष **श्री बुधमलजी बोहरा**- उपाध्यायप्रवर का नाम मान था, पर आपको मान छू भी नहीं पाया। आपश्री सरलवृत्ति वाले निरहंकारी महापुरुष थे। हर समय सहजता की झलक देखने को मिला करती। हर स्थिति में शांत रहना आपका स्वभाव बन गया। अन्यान्य सम्प्रदाय वाले भी अंतरंग श्रद्धा भक्ति के साथ इनकी सेवा सन्निधि का लाभ लेने को आतुर रहते। वे निस्पृही साधक थे। कोसाणा जैसे क्षेत्र में उपाध्यायश्री ने 3 चातुर्मास कर हम सबको उपकृत किया।

श्री परेशजी मुथा- गुरु हस्ती की दो सशक्त भुजाएँ, उनमें से एक भुजा का वरहदस्त नहीं रहना, संघ के लिये अपूरणीय क्षति है। उनकी हर प्रवृत्ति से संत-जीवन झलकता था। उपाध्याय प्रवर के चेहरे का तेज व सौम्यता हर आगत के लिये आकर्षण का बिन्दु रहा। वे सागर वर गंभीरा व रत्नसंघ की शान थे।

महासती श्री वृद्धिप्रभाजी म.सा.- धन्य है जीवन तुम्हारा, तुम मरकर भी अमर हो गये। उपाध्याय भगवन्त प्रथम उपाध्याय के रूप में रत्नसंघ में अधीष्ठित हुए। आपका आचार-विचार संघ की गौरव गरिमा के अनुरूप रहा। वे चांदनी के समान शीतलता के पुंज थे। वे ज्ञान से जिनशासन को प्रकाशमान कर रहे थे। सरलता, समता, सहिष्णुता के पर्याय एवं प्रवचन पटु थे। मुख मण्डल पर सदैव प्रसन्नता की झलक विद्यमान रहती।

व्याख्यात्री महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा.- वे ओजस्वी, वर्चस्वी, यशस्वी संत प्रवर थे। उनके प्रयाण से समूचा जैन जगत आर्त्त कर रहा है। उपाध्यायप्रवर का सारा जीवन गुणों से भरा हुआ था। साधना में सदैव सजग रहे। स्वाध्याय की पुस्तक हमेशा हाथ में रहती। हित मित भाषा फरमाकर सामने वाले को संतुष्ट कर देते। श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने किसी प्रसंग पर एक समय कहा- भगवंत आप भोले नहीं, चतुर हो। प्रत्युत्तर में उपाध्यायश्री ने सटीक शब्दों में कहा- मैं जो कुछ भी हूँ पर गेलो तो नहीं हूँ। ऐसे कई अनेक उदाहरण है।

सेवाभावी महासती श्री विमलावतीजी म.सा.- उपाध्यायप्रवर के लिये सम्बोधन कर कहा- दीपक जला, समय के साथ बुझ गया, पर जगमग रोशनी दे गया। उपाध्याय श्री सबके तारणहारा थे। आपश्री की याद में आज सारा जगत रो रहा है। वे सबके उपकारी थे। वे चौथे आरे की बानगी थे। अब वे शरीर से हमारे बीच नहीं है, पर उनके अनेकानेक गुण तो हमारी स्मृति में हैं। वे महान् सेवाभावी संतप्रवर थे। उनके गुणों को जीवन में उतारकर, आत्मा का उत्थान करें।

श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा.- उपाध्यायप्रवर के तेजस्वी चेहरे की अकृत्रिम सौम्यता ने प्रथम दर्शन में ही मुझे प्रभावित किया। इतनी ऊँचाई (उपाध्याय पद) पर पहुँचने के बाद भी उन्होंने अपनी सरलता को सजोंकर रखा। असीम आत्मशक्ति के धनी के संदर्भ में मुझे एक श्लोक याद आ रहा है-

धन्यं नेत्रं परम पुनितं, दर्शनं येन चाप्तम्,
धन्या जिह्वा गुण, श्रौतृकर्णो च धन्यौ।
चेतो धन्यं स्मरणनिरतं, पादलग्नं ललाटम्,
भक्त्या वन्दे तमयिविनतं, विश्वविश्वैक धन्यम्।।

उनके शुभदर्शनों को प्राप्त करने वाले नेत्र धन्य है। उनके गुणगान में निरत रहने वाली जिह्वा भी धन्य है। उनके गुणों को श्रवण करने वाले कान भी धन्य है। उनके स्मरण में सतत लगा रहने वाला चित्त भी धन्य है। उनके पवित्र चरणों को स्पर्श करने का सौभाग्य जिस ललाट को मिला, वह ललाट भी धन्य है और उस विनत महापुरुष को भक्ति से वंदन करने वाला यह समूचा विश्व धन्यता का अनुभव कर रहा है।

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.- राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की रचित पंक्तियाँ, श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर के साधनामय जीवन के 56 साल पर जब दृष्टिपात करते हैं, तो यथोचित प्रतीत लगती है-

जो इन्द्रियों को जीतकर, धर्माचरण में लीन है,
उनके मरण का सोच क्या, वो मुक्त बन्धनहीन है।
जो धर्मपालन से विमुख, जिनको विषय ही भोग्य है,
संसार में मरना उन्हीं का, सोचने के योग्य है।।

साधना के समय किसी भी प्रकार का संशय नहीं आया, ऐसी निर्मल संयम शुद्ध साधना उपाध्यायप्रवर की रही। यह तब ही संभव है- जब तीन बातों का प्रारम्भिक चरण से ही ध्यान रखा जाय:- 1. लक्ष्य दृष्टि, 2. परिपूर्ण पुरुषार्थ एवं 3. अनन्त धैर्य। धैर्य को पिता तुल्य बताया है। उपाध्यायप्रवर के संयमी जीवन में इन सभी की झलक देखने को मिली। मर्यादा पालक की छत्रछाया में साधना आराधना करने का मुझे भी सौभाग्य मिला। वे सेवामूर्ति थे। बड़ों की सेवा तो प्राय: करने के उनके भाव रहे ही, पर मेरे जैसे छोटे संत की भी उन्होंने सेवा की। वे सिलाई बहुत अच्छी करते। मेरे भी कपड़ों की सिलाई की। कई बार मेरे कपड़े भी बिना मुझे बताये धो दिया करते। लघुनीत भी मौका देखकर मेरे से पहले ही परठने के लिये पधार जाते। महापुरुष रक्षा कवच होते है। इनके जाने से निश्चित ही जिनशासन की क्षति हुई है। उनके सरलता-सहजता के गुण हमारे जीवन में भी आयें।

महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.- पौष शुक्ला सप्तमी के समय एक चुस्त ज्ञान सूर्य अस्त हो गया और रत्नसंघ को सुस्त कर गया। उपाध्यायप्रवर स्थविर पद से विभूषित थे। गुरु हीरा के शासन की विरल विभूति थे। 84 वर्ष से ऊपर की अवस्था थी। आगामी 14 जनवरी को 86 वें बसंत में प्रवेश करने से पूर्व ही वे महापुरुष प्रयाण कर गये। जब उपाध्यायप्रवर ने 84 वें वर्ष में प्रवेश किया था तब आचार्य भगवन्त ने उनके लिये विशेष पत्र लिखवाया था। पत्र में उल्लेख किया गया कि आपश्री ने 84 वर्ष पूरे कर चौरासी के चक्कर के फेरे कम कर दिये हैं। विगत वर्ष ही इस आशय का पत्र लिखवाया था। श्रुत स्थविर की ज्ञान गरिमा अद्भुत थी। सजगता-सरलता-सौम्यता-विनयता जेसे गुण आपके संयमी जीवन की विभूषा थी। आचार्यप्रवर ने समय-समय पर जो निर्णय लिये उन पर सदैव उपाध्याय प्रवर की सहमति रही। संघ को आगे बढ़ाने में उपाध्यायश्री का पूरा सहयोग रहा। विगत् 6 वर्षो से शारीरिक कारणों से जोधपुर विराज रहे थे। गौतममुनिजी के निर्देशन में जितेन्द्र मुनिजी ने अग्लान व अहोभाव से उपाध्यायप्रवर की महनीय सेवा का लाभ लिया। उनके गौरवमयी गुणों में से कुछ या जितने भी गुण जीवन में उतार सके, अपनाकर जीवन धन्य बनायें।

परम श्रद्धेय आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा.- बोलकर करने का नहीं, अब करने का समय है। एक बात रखूँ- पत्थर ठण्डा है या गर्म, रेत ठण्डी है या गर्म, हवा ठण्डी है या गर्म, पानी ठण्डा है या गर्म, आदमी ठण्डा है या गर्म। सामान्य आदमी भी प्रमोद के समय प्रसन्न नजर आता है और गुस्से के समय गर्म हो जाता है। जबकि क्रोध के वातावरण में उत्तेजित नहीं हो, आकुलता न हो, यह स्वभाव दशा है। सामायिक क्या है? साधना क्या है? हर स्थिति में सम रहना सामायिक है। क्रोध का

प्रसंग उपस्थित होने पर भी गर्म नहीं होना, विभाव में नहीं जाना यही साधना का सच्चा स्वरूप है। ऐसे अवसर आने पर विचलित नहीं होना साधना का प्रतिफल है। हर स्थिति में सम रहना उपाध्याय श्री की विशेषता रही। हमारी स्थिति क्या है? चिंतन करें।

अभी पूर्व में उपाध्यायश्री के जीवन के अनेकानेक गुण सुने। उन्होंने हर स्थिति में सम रहना सीख लिया था। क्या लाया, क्या आया? उसे नहीं देखना है। जो दिया, जितना दिया, वह ग्रहण कर लिया। आपने कहा बच्चे ने मान लिया, बच्चे ने कहा आपने मान लिया। वहाँ विषम वातवारण बनेगा ही नहीं। जीतू (जितेन्द्रमुनिजी) ने दवा दी तो ले ली। यदि नहीं दी तो यह नहीं कहा कि आज दवा नहीं दी। जीतू ने कह दिया आज अष्टमी है, उपवास करना है। कह दिया तो उपवास ही करनो है। जीतू ने कहा बाबजी अष्टमी के बाद दशमी आ रही है, वदि दशमी का आप उपवास करते ही है, अगर नवमी को पारणा नहीं करो तो तेले की साधना हो जायेगी और उपाध्याय श्री ने तेला कर लिया। आपकी और हमारी क्या स्थिति है। हमारे जीवन में कितना आग्रह है? हर बात में अपनी चलाना चाहते हैं। अगर हमें उनकी तरह रहना आ जाये तो घर में कभी टकराव होने वाला नहीं है।

हलवे का गुणगान करलो, क्या पेट भर जायेगा। मिठाई की प्रशंसा करने से क्या स्वाद आ जायेगा। उपाध्यायश्री के प्रेम सौहार्द की बातों को उनकी ही तरह, अपने जीवन में भी ये बातें आए ऐसी सोच, ऐसा लक्ष्य रहना चाहिये। हर स्थिति व वातावरण में सभी के प्रति समदृष्टि वाले भावों को बनाए रखना है।

अंतिम समय तक भी न कोई शिकवा है न ही कोई शिकायत। बिठा दिया तो बैठ गये। लिटा दिया तो लेट गये। किसी भी तरह की अपनी तरफ से हलचल नहीं। उनके गुण अनन्त है, कहना चाहें तो भी कहने में नहीं आ सकते। पर लेना चाहें तो ले सकते है। **अगर आपको सेवा का गुण अच्छा लगा तो सेवा का, सरलता का गुण अच्छा लगा तो अपना लीजिये। सजगता, सरलता, क्षमता के अनेक प्रसंग सुने। उन्हें सुनकर भेदविज्ञान को ध्यान में रख चलेंगे तो अनन्तानंत कर्म बंधन से बच जायेंगे।** सेवा, समान व्यवहार, छोटों की सेवा के गुणों में से गुण ग्रहण कर जीवन को सुन्दर बनायें।

व्रत-प्रत्याख्यान के अनन्तर पूज्य आचार्य भगवन्त ने पावन श्रीमुख से मांगलिक फरमाई।-जगदीश जैन

शक्तिनगर स्थानक, जोधपुर

उपाध्यायप्रवर की महाप्रयाण यात्रा के दूसरे दिन 04 जनवरी, 2020 को सामायिक-स्वाध्याय भवन, शक्तिनगर में गुणानुवाद सभा का आयोजन रखा गया। प्रातः 9.00 बजे मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 7 का पदार्पण हुआ तो कुछ समय बाद महासती श्री शशिकलाजी म.सा. एवं महासती श्री कान्ताजी म.सा. जो व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. की सेवा में दिग्विजयनगर विराजित थे, करीब 12 किलोमीटर का

विहार कर शक्तिनगर पधारे। शक्तिनगर का सामायिक-स्वाध्याय भवन ऊपर-नीचे एवं सीढ़ियों-गैलेरियों तक भक्तों की विशाल उपस्थिति से संवत्सरी महापर्व जैसा नजारा देखने को मिला।

गुणानुवाद सभा का शुभारम्भ **श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा.** ने उपाध्यायप्रवर के एक-एक गुण का वर्णन करते हुए उनकी संयम-साधना के अंश सुनाए। सेवा में सन्नद्ध रहने वाले **श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.** ने वृद्धावस्था एवं चलने की शक्ति नहीं होने की स्थिति में भी हर समय एक-एक आवश्यकता का ध्यान रखने वाले मुनिश्री ने अपने अनुभव का सजीव चित्रण कर उपाध्यायप्रवर की सजगता रेखांकित की। **वयोवृद्ध श्री अभयमुनिजी म.सा.** ने भी अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करते कहा कि उपाध्यायश्री की सहनशीलता बेजोड़ थी। **व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा.** के अनुभव उद्धृत करते **महासती श्री कान्ताजी म.सा.** ने उपाध्यायप्रवर के गुणगान कर श्रद्धा समर्पित की।

गुणानुवाद-सभा में सर्वप्रथम शासन सेवा समिति के सदस्य **श्री नौरतनमल जी मेहता** ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए श्रद्धासुमन अर्पित किए, जिसका विवरण पूर्व में परिचय के रूप में इसी अंक में अलग से दिया गया है।

वीरभ्राता **श्री महेन्द्रजी सेठिया** जो अच्छे गायक हैं उन्होंने ''मुनि मान महान् थे'' बोल में सुमधुर भजन के माध्यम से गुणगान किए।

रत्नसंघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना** ने उपाध्यायप्रवर के गुणों का स्मरण तो किया ही, आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर दोनों महापुरुषों के कुशल नेतृत्व में संघोन्नति की झांकी रखते हुए उपाध्यायप्रवर की सरलता-सजगता-संयम साधना के प्रति निष्ठा के संक्षेप में किन्तु प्रभावी रूप से गुणगान कर अपनी श्रद्धा व्यक्त की।

संघ संरक्षक **श्री प्रसन्नचन्दजी बाफना** ने गौरवशाली रत्नसंघ में आचार्य-उपाध्याय के परस्पर प्रेम को रेखांकित करते रत्नसंघ की गरिमा और महिमा में उपाध्यायप्रवर का योगदान और संयम-साधना पर विचार रखे।

संघ के कार्याध्यक्ष **श्री आनन्दजी चौपड़ा** ने अपनी ओर से उपाध्यायप्रवर के गुणों का उल्लेख करते हुए श्रद्धा-सुमन में दो शब्द कहे, साथ ही साथ जोधपुर एवं विशेष रूप से शक्तिनगर के युवारत्नों की सेवा और भक्ति को महत्त्वपूर्ण बताया। उन्होंने उपाध्यायश्री के किसी भी एक गुण को अपनाने का आह्वान भी किया।

संघ के उपाध्यक्ष **श्री मनमोहनजी कर्नावट** ने उपाध्यायप्रवर की वृद्धावस्था के कारण समय-समय पर जब भी जिस किसी चिकित्सक को श्रमणोचित औषधोपचार के लिए संघ ने याद किया, जोधपुर के चिकित्सकों ने सार-संभाल और श्रमणोचित उपचार में भावनापूर्वक सहयोग बनाए रखा। अतः संघ उन सभी चिकित्सकों का और चिकित्साकर्मियों की सेवाभावना के लिए आभार व्यक्त करता है।

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष **न्यायमूर्ति श्री प्रकाशजी टाटिया** ने अपने सम्बोधन

में संघहित में उपाध्यायप्रवर के योगदान का उल्लेख करते हुए कहा कि उस महापुरुष ने आबाल-वृद्ध सबको आत्मीयता-अपनत्व दिया। उपाध्यायप्रवर की अपणायत इतनी सहज थी कि हर कोई उस महापुरुष का प्रेम पाने को आतुर रहता। टाटिया साहब ने अपनी ओर से एवं रत्नसंघ परिवार की ओर से उपाध्यायप्रवर के स्वर्ग-गमन को अपूरणीय क्षति तो बताया ही, उनकी स्मृति स्थाई रखने के लिए उनके गुणों को आत्मसात् करने पर बल दिया।

संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक एवं संघ-सेवा शिरोमणि ''भाई साहब'' **श्री मोफतराजजी मुणोत** ने अपनी बात मेरे मन के भगवन् आचार्य श्री हस्ती और मेरी श्रद्धा के केन्द्र आचार्य श्री हीरा को वन्दन करते हुए कहा कि हम भले ही बड़ी-बड़ी तपस्या कर सकें या न भी कर सकें तो भी उपाध्यायप्रवर की सरलता का गुण अपनाकर मन की तपस्या करने में तो पीछे नहीं रहें। गुरु हस्ती की भावना रखने के लिए पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. ने उपाध्याय-पद स्वीकार किया और निभाया भी परन्तु वे उपाधि को व्याधि मानने वाले रहे हैं, इसलिए उन्होंने अपनी ओर से आचार्यश्री जी को संघ व्यवस्था में यह कहकर कि संघनायक का आदेश ही नहीं, संकेत भी सर्वोपरि होता है, उसको मानना हमारा हम-सब का फर्ज है। संघ की एकता-एकरूपता बनी रहे इसमें उपाध्यायप्रवर का योगदान सदा याद किया जायेगा।

स्थानीय श्राविका मण्डल की अध्यक्षा **श्रीमती सुमनजी सिंघवी** ने अपनी ओर से एवं श्राविका मण्डल की ओर से श्रद्धा-सुमन अर्पित किए वहीं **प्रो. श्रीमती मीताजी मुल्तानी** ने भी उपाध्यायप्रवर के गुणगान किए।

संघ के संयुक्त महामंत्री **श्री प्रकाशजी सालेचा** ने अपनी बात गुरु हस्ती के अंतिम पाली चातुर्मास में आचार्य भगवन्त द्वारा अपनी दोनों भुजाओं की मजबूती का परिचय देते हुए कहा कि गुरुदेव कहते थे-''मैंने तो संघ की गाड़ी अकेले चला दी, अब ये दोनों पं. रत्न जो मेरी सक्षम भुजाओं के समान हैं, वे संघ-रथ को चलायेंगे।'' गुरु हस्ती की दीर्घदृष्टि हम सब ने देखी है। मैं उपाध्यायप्रवर के अनेकानेक गुणों के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करता हूँ।

संघ महामंत्री एवं वीरभ्राता **श्री धनपतजी सेठिया** ने उपाध्यायप्रवर के बचपन-यौवन के प्रमुख-प्रमुख उदाहरण उद्धृत करते हुए कहा कि शुरू से उनकी धर्मभावना तो रही ही, गुरु हस्ती और पं. रत्न श्री लक्ष्मीचन्दजी म.सा. की कृपा से उनकी संयम-साधना उत्तरोत्तर बढ़ी-फलीभूत हुई। अग्लानभाव से सेवा का उपाध्यायप्रवर का आदर्श जन-जन की जिह्वा पर है, मैं सश्रद्धा-सभक्ति उस दिव्यात्मा का स्मरण कर गुणकीर्तन करता हूँ।

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि संयम की श्रेष्ठ साधना करने वाले उपाध्यायप्रवर ने इस देह को छोड़कर देहातीत बनने की दिशा में प्रयाण किया है, उपाध्यायप्रवर का स्वर्ग-गमन संघ के लिए क्षति है, तो भी हम-सबको उनकी सरलता-सहजता-सजगता सदा-सर्वदा प्रेरणा देती रहेगी। उपाध्यायप्रवर अल्पभाषी थे-मधुरभाषी थे। वे शान्त थे, सौम्य थे। 'आनन्द हैं' का हर समय उनका वचन सबको

आनन्दित करता। उनका नाम मान था, पर वे विनयमूर्ति थे। उपाध्यायप्रवर के संतोष गुण का विवेचन करते मुनिश्री ने कहा वे संतोषी थे और जो भी संतोषी होता वह पाप-कर्म नहीं करता। उनका स्वभाव ही ऐसा था कि-''दे जिको खा लेणो और केवे जिको सुण लेणो।'' मुनिश्री ने स्वर्गगमन तक उपाध्यायप्रवर की सजगता को बड़ी उपलब्धि बताया।

श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. ने आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर को सूर्य-चन्द्र की तरह बताते कहा कि दीर्घ दृष्टा गुरु हस्ती ने दोनों पदधारियों का चयन किया इसलिए वे हमारे आराध्य हैं, पूजनीय है। उपाध्याय ज्ञान के भण्डार होते हैं। मैं उस महापुरुष के किस गुण का वर्णन करूँ सोच ही रहा था, कि मुझे 02 जनवरी याद आई। दो जनवरी की याद में दो का सुन्दर योग रहा है। भरत क्षेत्र में दूसरा पद है-उपाध्याय का। रत्नसंघ में आचार्य के बाद उपाध्याय पद भी दूसरे स्थान पर है। जोधपुर में दीक्षा हुई, तब भी मगन-मान की जोड़ी में दो एक साथ दीक्षित हुए। सात भाईयों में उपाध्यायप्रवर का दूसरा नम्बर रहा। उपाध्यायप्रवर की दीक्षा वि.सं. 2020 हुई तो स्वर्ग-गमन 2020 में। दोनों वर्षो में दो का सहज संयोग है। कहना होगा-हमारे आराध्य उपाध्यायश्री संयोग के धनी रहे हैं। आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर दोनों एक-दूसरे के भावों को जानते थे। उपाध्यायश्रीजी का नाम मानचन्द्र था। हम यदि ''मान'' का विश्लेषण करें तो पहला अक्षर ''म'' है। ''म'' से मृदुता-मधुरता है। इसीलिए तो वे हर-एक को अपना मानते थे। उनकी धारणा कि-''सब मेरे हैं और मेरा कोई नहीं।'' 'म' के साथ 'आ' की मात्रा जुड़ी है, इसलिए 'मा' शब्द बना है। 'आ' यानी आत्मार्थी। उपाध्यायप्रवर आत्मार्थी थे उनका आदर्श सेवाभावना रहा। 'न' अक्षर में नम्रता है तो निश्छलता भी है। मैं जब 18-12-19 को उपाध्यायप्रवर की सेवा में आया, तो किसी संत ने उपाध्यायश्री से पृच्छा की- आप जानते हैं- कौन है ये?कुछ रूककर उपाध्यायश्रीजी बोले- ''पनजी रो पोतो हैं।'' यह है उनकी सरलता। कल एक भाई आया- उसने कहा कि उपाध्यायप्रवर और श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी का सम्बन्ध तो महावीर- गौतम सा रहा है। उस भाई ने कहा कि गौतम के महावीर चले गये। उपाध्यायप्रवर को हर आगत देखता था, देखते-देखते कभी उनकी आँखें भरती नहीं, आज उनकी याद में आँखें भर जाती है।

उपाध्यायश्री जी की चर्चा करते मुनिश्री ने कहा- उपाध्यायश्री जी का नाम मान था पर वे संघ के अभिमान थे। हमारा अभी-अभी मान गया, पर संघ का अभिमान सुरक्षित है। हमें उसे संभालकर रखना है।

मुनिश्री ने उपाध्यायप्रवर के गुणों का स्मरण कर अपनी श्रद्धा अर्पित की।

मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. जो विगत कई वर्षो से उपाध्यायप्रवर की सेवा-सन्निधि में रहते आए हैं, इसलिए उनके हृदय के उद्‌गार प्रमुख रूप से उस महापुरुष के व्यक्तित्व-कृतित्व को रेखांकित करने वाले कहे जा सकते है। मुनिश्री ने कहा- उपाध्यायप्रवर की साधना विशेष थी तो उनका अतिशय भी प्रभावी रहा। क्यों? तो उस महापुरुष का जीवन खुली किताब था। एक बार प्रभावना

को लेकर किसी का प्रश्न हुआ- तो वाक् चातुर्य का परिचय देते उपाध्यायप्रवर ने प्रत्युत्तर में कहा- ''अप्रभावना से बचते रहना ही सच्ची प्रभावना है।'' उपाध्यायश्री जी अप्रमत्त थे। उपाध्यायश्री जी यदा-कदा अपने भक्तों को कहते भी थे कि आप सामायिक में आसन चंचल रखेगे, तो देवताओं का आसन कैसे चलायमान होगा?

''जैसे को तैसा, उसका मोक्ष कैसा'' उपाध्यायश्रीजी के अभिमत को रेखांकित करते मुनिश्री ने सहज- शान्त और संतोषी बने रहने की शिक्षा ग्रहण करने की जरूरत बताई।

उपाध्यायश्रीजी पुण्यशाली और अतिशयधारी थे। एक बार विहार में किसी भाई ने विनती रखी और कहा- ''बाबजी! म्हारे घरे पधारो।'' उपाध्यायश्रीजी का उत्तर था-''मैं तो घर छोड़कर आया, मैं तो आपको भी घर छोड़ने की बात कहता हूँ।''

उपाध्यायश्री जी का जीवन लघुता से आदर्श बना। क्यों? तो उनका जन्म अजन्मने के लिए हुआ। उपाध्यायप्रवर का जीवन पूर्णिमा के चन्द्र समान था। उनका देवलोकगमन भी पूर्ण प्रकाश में हुआ अर्थात् सूर्यास्त के पूर्व उनका स्वर्गगमन हो गया।

मुनिश्री ने अपने लिए हुई अहमदाबाद की विनती का उल्लेख करते कहा- आचार्यश्री जी अपनी भावना किसी पर थोपते नहीं, बल्कि भावना जान-समझकर आज्ञा देते हैं। आचार्यश्रीजी ने मेरे से पूछा- तो मैंने कहा- मैं वर्षो से उपाध्यायप्रवर की सेवा में रहा हूँ, अहमदाबाद जाने पर अन्त समय यदि पास में नहीं रहता तो मन को बड़ा मलाल रहता। आचार्यश्री जी ने कहा- ठीक है, आपका उपाध्यायप्रवर की सेवा में रहने का मन है तो, रहो। यह हैं संघनायक की कृपा।

उपाध्यायश्रीजी ने स्वामीजी श्री सुजानमलजी महाराज की तरह संघ को सहयोग बनाए रखा। उपाध्यायश्री जी की सरलता के कई उदाहरण हैं तो कष्ट सहिष्णुता के भी बहुत प्रसंग ध्यान में है। विजयनगर में उपाध्यायश्रीजी के पास एक भाई ने कहा- ''बाबजी! माताजी बीमार हैं, आप मांगलिक देने पधारे। उपाध्यायश्रीजी ने भाई की भावना सुनकर कहा- ''ठीक है, हम सायं स्थंडिल तो जाते ही हैं, कुछ देर पहले निकल कर आपके वहाँ गुलाबपुरा पहुँचने का भाव रखते है। उपाध्यायश्रीजी जेठ की तीव्र गर्मी में भरी दुपहरी में गुलाबपुरा पहुँचे, बहिन को मांगलिक सुनाई और उस माताजी का रात में स्वर्गवास हो गया। उपाध्यायश्रीजी की कैसी लघुता रही आप उदाहरण से समझ सकते है।

उपाध्यायश्रीजी का दिल्ली चातुर्मास घोषित हो गया। आचार्यश्रीजी ने मुझसे कहा- तुम्हें साथ जाना है। मेरे को उस समय अन्तगड सूत्र की वाचना नहीं आती थी, इसलिए मैंने निवेदन किया-''गुरुदेव! मुझे तो शास्त्र-वाचन नहीं आता?कृपालु गुरुवर्य ने तुरन्त कहा- आ, मैं सीखाता हूँ। गुरुदेव ने दस दिन में अन्तगड सूत्र की वाचना सीखा दी। दिल्ली में उपाध्यायश्रीजी की वाक् पटुता, प्रवचन-शैली और प्रतयुत्पन्नमति देख-देखकर दिल्ली वाले सोचने पर मजबूर हो गए कि ज्ञान-क्रिया के भण्डार उपाध्यायप्रवर ऐसे योग्य हैं तो इनके गुरु (आचार्य श्री हस्ती) कैसे होंगे?

दिल्ली के प्रमुख-प्रमुख श्रावक आचार्य श्री के दर्शन-वन्दन के लिए सवाईमाधोपुर गए। लौटकर, उन्होंने कहा- हमने तो भगवान के दर्शन किए हैं।

वाक् पटुता का एक अन्य उदाहरण प्रस्तुत करते मुनिश्री ने कहा- किसी भाई ने उपाध्यायश्रीजी से पूछा- ''बाबजी! डॉक्टर साहब, ऑपरेशन करवाने का कह रहे हैं, मैं क्या करूँ?'' उपाध्यायश्रीजी ने ऑपरेशन करवाने की हाँ या ना में जवाब देने के बजाय कहा- रोग बढ़ाने में सार नहीं है।

उपाध्यायश्रीजी से संत कभी पृच्छा करते- आपश्री को लघु शंका की हाजत हो तो ले जाऊँ क्या? उपाध्यायश्री का जवाब होता- अभी नहीं। बाद में ले जाने की जरूरत पड़ सकती है, शब्द बचाकर कहना आपश्री जी की विशेशता थी। हमें उनके जीवन से सीखना चाहिए। उपाध्यायश्रीजी की विहार की पुण्यवानी भी गजब थी। कोटा से विहार करते कोटा के रास्ते में गिर जाने से होठ-दांत के बीच खून बहने लगा। रास्ते में कहाँ सुविधा मिलेगी, हम चर्चा कर ही रहे थे कि सड़क के दूसरी तरफ एक छोटा-सा क्लिनिक था। पुण्य के प्रताप से उपचार तो हुआ ही, विहार भी बाधित नहीं हुआ। उपाध्यायश्रीजी के ऐसे कई प्रसंग हैं। हम प्रसंगों पर चर्चा नहीं करके उनके गुणों का स्मरण करें, गुण ग्रहण का भाव रखें तो ही हमारा गुणगान करना सार्थक होगा।

अंतिम वक्ता के रूप में जोधपुर संघ अध्यक्ष **श्री सुभाषजी गुंदेचा** ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उपाध्यायप्रवर की जोधपुर पर विशेष कृपा रही। उपाध्यायप्रवर का दीप्तिमान मुख मण्डल सभी को प्रभावित कर जाता था। जो भी आपके एक बार भी दर्शन कर लेता वह बार-बार दर्शन पाने को लालायित हो उठता था। जिनशासन गौरव परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की सेवा से प्राप्त पत्र का प्रवचन सभा में वाचन किया गया। तत्पश्चात् उपस्थित जन-समुदाय द्वारा चार लोगस्स के पाठ से श्रद्धासुमन अर्पित किए गए। गुणानुवाद सभा का सफल संचालन युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री गजेन्द्रजी चौपड़ा द्वारा किया गया।

अहमदाबाद– पं.रत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. का रविवार 02 जनवरी, 2020 को चौविहार प्रत्याख्यान के साथ समाधिमरण पर 04 जनवरी, 2020 को श्रद्धेय श्री नंदीषेणमुनिजी म.सा. एवं श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा. के सान्निध्य में श्री एलिस ब्रिज स्थानकवासी जैन संघ, पालड़ी-अहमदाबाद में गुणानुवाद सभा रखी गई। सर्वप्रथम श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा. ने उपाध्याय भगवन्त का जीवन परिचय दिया एवं आपकी सरलता, सादगी, संयम निष्ठता, समता, सेवा, स्वाध्याय, आगम निष्ठता, आचार्यश्री के प्रति समर्पण भाव, स्नेह, प्रेम, वात्सल्य, निर्भयता, ज्ञान-क्रिया के बेजोड़ आदर्श, तप-त्याग आदि अनेक गुणों को बताया। उनके गुणों को धारण कर जीवन सफल बनाने की प्रेरणा दी।

उपाध्यायश्री को श्रद्धांजलि देते हुए श्रावक रत्न श्री पदमचन्दजी कोठारी ने जोधपुर अन्तिम यात्रा का चित्र बताते हुए कहा कि आप महायोगी, उच्च कोटि के साधक, महावीर एवं गुरु हस्ती के अनमोल मोती मान रहित थे। आपका नाम स्वर्ण

अक्षरों में अंकित होगा। आप जिनशासन की शान, संत समाज की शान, मर्यादा पुरुष, चारित्र धर्म की खान, आगम के जीवंत ज्ञान, मर्यादा का सदा भान रखने वाले गुरु हस्ती के महान् शिष्य थे। आपके दर्शन, मांगलिक एवं धर्म ध्यान की प्रेरणा मात्र से दर्शनार्थी को शांति एवं सुखद अनुभव होता था। आपका जीवन ही जीता जागता आगम था। पूरे जैन समाज को क्षति हुई है। आपकी सद्प्रेरणा को आत्मसात् करेंगे तो सुख, शांति का अनुभव होगा। श्री एलिस ब्रिज स्थानकवासी जैन संघ एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-अहमदाबाद की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की गई। श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की बहनों द्वारा-''गुरुवर मान महान् थे, जिनशासन की शान थे'' स्तवन प्रस्तुत कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

अंत में पूज्य **श्री नन्दीषेणाजी म.सा.** ने गुणानुवाद करते बताया की मानमुनि सा अप्रमत संत थे। ज्ञान-ध्यान सिखाने को सदैव तत्पर रहते थे। सरल, सेवाभावी, विनयवान, सदा धर्म की ही प्रेरणा देने वाले, शरीर की ममता नहीं रखने वाले, समतावान एवं संयम साधना में सहयोग प्रदान करने वाले सच्चे महान् संत रत्न थे। अप्रमत्तता उनके जीवन का विशेष गुण था। रत्नवंश के नीव के पत्थर समान उनको सदा याद किया जायेगा। उनके जीवन से प्रेरणा लेकर जीवन में सुधार लाने की प्रेरणा दी। गुणानुवाद सभा में लगभग 150 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रहीं। अंत में 4 लोगस्स के ध्यान के साथ श्रद्धासुमन अर्पित किये।-पदमचन्द कोठारी

प्रतापनगर, जयपुर– पं. रत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. का रविवार 02 जनवरी, 2020 को चौविहार प्रत्याख्यान के साथ समाधिमरण पर दिनाँक 04 जनवरी, 2020 को प्रातः 10.00 बजे प्रतापनगर स्थित सामुदायिक केन्द्र में **साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकंवरजी म.सा.** आदि ठाणा के सान्निध्य में आयोजित की गई गुणानुवाद सभा का प्रारम्भ **महासती श्री संगीताजी म.सा.** के प्रवचन से हुआ, जिसमें उन्होंने उपाध्याय भगवन्त के जीवन में घटित अनेक घटनाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। तत्पश्चात् **महासती श्री चैतन्यप्रभाजी म.सा.** ने ऐसी आत्माओं के गुणगान क्यों करने चाहिए और क्यों किए जाते हैं इस पर प्रकाश डालते हुए उपाध्याय भगवन्त के अनेक गुणों का विवेचन किया। सभा में उपस्थित शासन सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलालजी बाफना-जलगांव, संघ-संरक्षक श्री विमलचन्दजी डागा, जिनवाणी के प्रधान सम्पादक डॉ. धर्मचन्दजी जैन, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के मंत्री श्री अशोकजी सेठ, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ जयपुर के अध्यक्ष श्री प्रमोदजी महनोत ने भी उपाध्याय भगवन्त के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके गुणगान कर अपने जीवन को उनके अनुरूप बनाने का आह्वान किया। श्री राजकुमारजी बुरड़ द्वारा उपाध्यायप्रवर के गुणगान में एक भजन की प्रस्तुति की गई। महासती **श्री सुमनलताजी म.सा.** ने प्रवचन सभा में अपने उद्गार व्यक्त करते हुए भावभरी श्रद्धांजलि अर्पित की और उनके गुणों में से कोई भी एक गुण अपनाने का आह्वान किया। कार्यक्रम के अंत में चार लोगस्स का ध्यान कर दिवंगत आत्मा के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। सभा में लगभग 400

श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। गुणानुवाद सभा का आयोजन श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-जयपुर, श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल- जयपुर एवं श्री जैन रत्न युवक परिषद्-जयपुर द्वारा किया गया। सभा का संचालन श्री सुशीलजी जैन, मंत्री प्रतापनगर संघ ने किया।

अजमेर– उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. का रविवार 02 जनवरी, 2020 को चौविहार प्रत्याख्यान के साथ समाधिमरण होने पर दिनांक 04 जनवरी, 2020 को विदुषी महासती **श्री सुशीलाकंवरजी म.सा.** आदि ठाणा के सान्निध्य में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, अजमेर द्वारा गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। महासती मण्डल ने फरमाया कि उपाध्यायप्रवर की साधना आराधना से सभी प्रभावित थे। संयम के प्रति उनकी दृढ़ता हमसब के लिए आदर्श है। इस अवसर पर सुश्रावक श्री सी.पी. गांधी, श्री विनीतजी रियांवाला, श्री प्रेमसुखजी सुराणा, श्री अशोकजी नाहर, श्री बलवीरजी पीपाड़ा, श्री राजेन्द्रजी रांका ने भी गद्य-पद्य द्वारा गुणानुवाद किए।

-चन्द्रप्रकाश कटारिया

विजयनगर (अजमेर)– उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. का रविवार 02 जनवरी, 2020 को चौविहार प्रत्याख्यान के साथ समाधिमरण होने पर व्याख्यात्री महासती **श्री मनोहरकंवरजी म.सा.** आदि ठाणा 3 ने गुणानुवाद करते हुए फरमाया सूर्य-चन्द्र के समान हीरा-मान की जोड़ी रही, उपाध्याय प्रवर का रत्नसंघ ही नहीं अपितु सम्पूर्ण चतुर्विध संघ को दिया गया अवदान स्वर्णाक्षरों में अंकित हुआ है। संयम-साधना, आत्मोन्नति के लिए उनके द्वारा दिया गया बोध संयमयात्रा में सदैव पाथेय सिद्ध होगा।-डॉ. नवलसिंह जैन

चेन्नई– उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. का रविवार 02 जनवरी, 2020 को चौविहार प्रत्याख्यान के साथ समाधिमरण होने पर श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-तमिलनाडु के तत्त्वावधान में **व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा.** आदि ठाणा के सान्निध्य में 04 जनवरी, 2020 को प्रातः 9.00 बजे ए.एम.के.एम मेमोरियल ट्रस्ट, पुरसवाक्कम में गुणानुवाद सभा आयोजित की गयी। **महासती श्री हेमप्रभाजी म.सा.** ने ''जिन नहीं पर जिन सरीखे केवली नहीं पर केवली सरीखे'' के माध्यम से विस्तृत उल्लेख कर उपाध्यायप्रवर के गुणगान किये। **महासती श्री वर्षाजी म.सा.** ने ठाणांगसूत्र की चौभंगी का उल्लेख करते हुए उपाध्यायश्री के गुणगान किये। **महासती श्री सिंधुप्रभाजी म.सा.** ने ठाणांग सूत्र के छठे ठाणे में आत्मार्थी पुरुष की छह बाते पर्याय, परिवार, श्रुत, तप, लाभ, पूजा-सत्कार से सुशोभित उपाध्यायश्री मानचन्द्रजी म.सा. के जीवन के अनेकानेक प्रेरणादायक संस्मरण रखे। उपाध्याय भगवन्त के शान्त-दान्त-'गंभीर, प्रबल पुरुषार्थी, पण्डितरत्न आदि उपाधियों का पूर्ण विश्लेषण करते हुए उनके साधनामय संयमी जीवन के अनेक उद्धरणों के माध्यम से श्रोताओं को श्रवण करवाया। **महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा.** ने उपाध्याय भगवन्त के सरलता, विनम्रता, सेवा पंडितता, भाषा समिति आदि अनेक सद्गुणों का पूर्ण विश्लेषण करते हुए उनके साधनामय संयमी जीवन के अनेक उद्धरणों के माध्यम से

श्रोताओं को श्रवण करवाते हुए उपाध्यायश्री की मुख्य भावना कि साधु-साध्वीगण के तो समाचारी पालन में और कठोरता आई हैं, अभिवृद्धि हुई है, मेरी भावना है कि रत्नसंघ के हर श्रावक-श्राविका भी ज्ञानवान व क्रियावान बने। तत्पश्चात् व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. ने मांगलिक फरमाई। गुणानुवाद सभा में संघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी.एस. सुराणा, सुधर्म संस्कृति संघ-तमिलनाडु के अध्यक्ष श्री पारसमलजी टाटिया, श्री गौतमराजजी सुराणा, श्री गौतमचन्दजी कटारिया, श्री जयमल जैन श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिखरचन्दजी बेताला, श्रीमती संगीताजी बोहरा, श्री रमेशजी जांगड़ा, श्री ललितजी बाघमार, श्री एच. महावीरचन्दजी ओस्तवाल, श्री नवरतनमलजी बागमार, श्री चम्पालालजी बोथरा, श्री मांगीलालजी चोरडिया, श्री महावीरजी तातेड़, श्री अशोकजी रांका, श्री विनोदजी जैन व श्री जवाहरलालजी कर्णावट ने उपाध्याय भगवन्त के चरित्रमय जीवन के गुणगान किए। चेन्नई महानगर के अनेक क्षेत्रों से विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों व प्रतिनिधिगण ने इस सभा में भाग लिया। गुणानुवाद सभा का संचालन श्रावक संघ के मंत्री श्री ज्ञानचन्दजी बाघमार ने किया। -आर.नरेन्द्र कांकरिया, प्रचार-प्रसार सचिव

कोत्तुर (कर्नाटक)– पं. रत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. का रविवार 02 जनवरी, 2020 को चौविहार प्रत्याख्यान के साथ समाधिमरण पर दिनाँक 04 जनवरी, 2020 को **व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा.** आदि ठाणा के सान्निध्य में कोत्तुर में गुणानुवाद सभा का आयोजन हुआ। व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. ने श्रद्धा अर्पित करते हुए कहा कि उपाध्यायश्री का जीवन शान्त, सरल, सहज और सौम्य था। वे मौन साधक थे, वे बोलते कम थे पर उनका जीवन बोलता था। पूज्य आचार्य भगवन्त की कृपा से हम सती-मण्डल को भी जोधपुर, ब्यावर, बिलाड़ा, बालोतरा आदि क्षेत्रों में उपाध्यायश्री की सेवा का पुण्योदय से लाभ मिला। उनका आभायुक्त मुख-मण्डल, ओजस्वी प्रवचन, बालक सी निश्चलता, संयम में वज्र से कठोर, करुणामय कोमल हृदय सभी को प्रभावित कर जाता एवं दर्शन करने मात्र से मन में असीम शान्ति का प्रवाह होता। आपश्री का उपकार हम सती मण्डल पर सदा स्मरणीय रहेगा। हमारे विरक्ति के भावों में दृढ़ता बढ़ाने हेतु ज्ञानादि देकर अनन्त कृपा की। ''समो निंदा पसंसासु'' का जीवन जीने वाले, देहातीत झुले झुलने वाले, ''क्षण निकम्मो रहनो नहीं'' का आदर्श निभाने वाले, आत्मार्थी साधक रत्न, पद लिप्सा से दूर रहने वाले श्रद्धेय उपाध्याय भगवन्त का जीवन हमसब के लिए आदर्श है। महासती मण्डल के साथ ही उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने भी उपाध्यायश्री के गुणगान किए।-अनिल जैन

गंगापुरसिटी– उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. का रविवार 02 जनवरी, 2020 को चौविहार प्रत्याख्यान के साथ समाधिमरण होने पर रविवार, 05 जनवरी, 2020 को दोपहर 1.30 से 2.30 बजे तक महासती **श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा.** आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में मदर इण्डिया छात्रावास, गंगापुरसिटी में गुणानुवाद सभा रखी गई। सभा में शाखा अध्यक्ष श्री जितेन्द्रसिंहजी जैन, श्री अजीतजी जैन, श्री शीतलजी

जैन ने उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के बारे में गुणगान किया। सती मण्डल द्वारा भी उपाध्याय भगवन्त के कठोर तप, संयम-साधना के बारे में गुणगान किया गया। सभा में लगभग 65 श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित रहे।-राकेश पल्लीवाल, शाखा मंत्री

खेड़गांव (महा.)– उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. का रविवार 02 जनवरी, 2020 को चौविहार प्रत्याख्यान के साथ समाधिमरण होने पर यहाँ विराजित सेवाभावी महासती **श्री विमलेशप्रभाजी म.सा.** आदि ठाणा 3 ने गुणानुवाद करते हुए कहा कि भगवन्त का जीवन सरलता, सजगता, सहिष्णुता आदि अनेक गुणों का संगम था। वे शासक थे, उन्होंने अनुशासन किया पर दूसरों पर नहीं स्वयं पर किया।

-रीटा जैन

मडगांव– उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. का रविवार 02 जनवरी, 2020 को चौविहार प्रत्याख्यान के साथ समाधिमरण होने पर व्याख्यात्री महासती **श्री रुचिताजी म.सा.** आदि ठाणा 6 ने गुणानुवाद करते हुए फरमाया कि जिनशासन के अनूठे शिल्पी एक सतत जाग्रत पहरेदार का अभाव हुआ है। जिनका साहस भरा श्रमण जीवन युगों-युगों तक आदरणीय, अनुकरणीय, प्रशंसनीय, सराहनीय रहेगा।

-हेमलता जैन

धरणगांव– उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. का रविवार 02 जनवरी, 2020 को चौविहार प्रत्याख्यान के साथ समाधिमरण होने पर व्याख्यात्री महासती **श्री पद्मप्रभाजी म.सा.** आदि ठाणा 4 ने गुणानुवाद करते हुए कहा कि रत्नसंघ के इस भव्य विशाल भवन में आचार्य भगवन्त विस्तृत एवं अखण्ड छत की भांति मेढ़ीभूत है और उपाध्याय भगवन्त मजबूत दिवार की भांति आलम्बन भूत थे।-निकिता गेलड़ा

हिण्डौनसिटी– उपाध्यायप्रवर परम श्रद्धेय श्री मानचन्द्रजी म.सा. का 02 जनवरी, 2020 को चौविहार प्रत्याख्यान के साथ समाधिमरण हो जाने पर श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संस्थान, हिण्डौनसिटी द्वारा जैन स्थानक भवन में दिनाँक 05 जनवरी, 2020 को गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया, जिसमें उपाध्यायश्री के कठोर तप, संयम, नियम, साधना व उनके संयमी जीवन के बारे में गुणगान किया गया। इस गुणानुवाद सभा में लगभग 60 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रहीं।

-धर्मचन्द जैन, मंत्री

कोलकाता– उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. का चौविहार प्रत्याख्यान के साथ समाधिमरण होने पर रविवार 05 जनवरी, 2020 को दक्षिण कोलकाता के भवानीपुर स्थित महावीर सदन में गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के प्रथम चरण में सामूहिक सामायिक, भक्तामर पाठ एवं गुरु वंदन का कार्यक्रम हुआ। गुणानुवाद का संचालन करते हुए श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के मंत्री श्री कमलजी भण्डारी ने उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के संयमी जीवन पर प्रकाश डाला। संस्था के सहमंत्री श्री दिलीपजी मेहता ने कहा कि संघ में हुई क्षति की भरपाई करना मुश्किल है। क्षेत्रीय प्रधान श्रीमती मंजू प्रेमजी भण्डारी ने भजन के साथ गुरुदेव के सौम्य, शान्त, सरल व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। कोलकाता महिला

मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती मंजूजी सुराणा ने उपाध्याय भगवन्त के गुणगान करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी। श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्रीमती बिमलाजी भण्डारी ने कहा कि उपाध्याय श्री जी महान् विभूति थे। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चंचलमलजी बच्छावत ने बताया कि वह बचपन से ही उपाध्यायश्री के सम्पर्क में आए एवं उनसे समय-समय पर प्रेरणा प्राप्त करते थे। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के दिलीपजी बोथरा ने युवा पीढ़ी को सामायिक करने की प्रेरणा दी।-कमल भण्डारी, मंत्री

हैदराबाद– उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. का रविवार 02 जनवरी, 2020 को चौविहार प्रत्याख्यान के साथ समाधिमरण पर राजस्थान प्रवर्तिनी श्रमणसंघीय **साध्वी शिरोमणि महासती श्री यशकंवरजी म.सा.** की सुशिष्या महासती **श्री प्रज्ञाज्योतिजी म.सा.**, महासती **श्री सुधाकंवरजी म.सा.** आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में कांचीगुड़ा स्थित श्री पूनमचन्द जैन स्थानक में गुणानुवाद सभा आयोजित की गई। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, ग्रेटर हैदराबाद, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्राविका मण्डल, युवक परिषद्, हैदराबाद- सिकंदराबाद के श्रावक-श्राविकाओं ने उपाध्यायप्रवर के संयमी जीवन के गुणगान करते हुए उनके प्रति श्रद्धासुमन अर्पित किए।-पारस डोसी

खारिया मीठापुर (जोधपुर)– उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. का रविवार 02 जनवरी, 2020 को चौविहार प्रत्याख्यान के साथ समाधिमरण पर खारिया मीठापुर में सामूहिक श्रद्धांजलि का आयोजन रखा गया, जिसमें प्रबुद्ध श्रावक-श्राविकाओं के साथ 36 कौम के सैकड़ों धर्म प्रेमियों ने उनके गुणस्मरण करते हुए उनको श्रद्धांजलि अर्पित की। कतिपय श्रावक-श्राविका उनकी अन्तिम यात्रा में शामिल होने के लिए जोधपुर भी पधारे।

शिरपुर (महा.)– उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. का रविवार 02 जनवरी, 2020 को चौविहार प्रत्याख्यान के साथ समाधिमरण पर रविवार, 05 जनवरी, 2020 को सुबह 8.45 बजे को नवकार महामंत्र का जाप का आयोजन किया गया। तत्पश्चात् श्री सुवालालजी ललवानी (संघपति), श्री नवनीतजी राकेचा, श्री पारसमलजी संकलेचा, श्री मुकेशजी बुरड़, श्री भीकमचन्दजी दुग्गड़, श्री विशालजी बागरेचा, श्री आतिशजी सेठिया, श्री संदीपजी मुणोत ने अपने भाव प्रकट किये। 4 लोगस्स के द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की गई। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ संयोजक श्री सचिनजी बागरेचा, श्री जितुजी संकलेचा आदि पदाधिकारियों सहित लगभग 300 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।-सागर सेठिया

मैसूर (कर्नाटक)– उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. का रविवार 02 जनवरी, 2020 को चौविहार प्रत्याख्यान के साथ समाधिमरण पर श्री स्थानकवासी जैन संघ मैसूर द्वारा रविवार, 05 जनवरी, 2020 को स्वाध्याय कक्षा के पश्चात् उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. को 4 लोगस्स के द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की गई। सभा में लगभग 250 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

कोटा– उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. का रविवार 02 जनवरी, 2020 को चौविहार प्रत्याख्यान के साथ समाधिमरण होने पर श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, रामपुरा बाजार, कोटा द्वारा रविवार, 05 जनवरी, 2020 को जैन दिवाकर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ स्थानक में विराजित उपाध्यायप्रवर परम पूज्य **श्री मूलमुनिजी म.सा.** एवं उपप्रवर्तक **श्री राकेशमुनिजी म.सा.** के पावन सान्निध्य में संघ द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए गुणानुवाद किये गये।

मुम्बई– उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. का रविवार 02 जनवरी, 2020 को चौविहार प्रत्याख्यान के साथ समाधिमरण होने पर रविवार, 05 जनवरी, 2020 को प्रातः 9.00 बजे घाटकोपर मुम्बई में गुणानुवाद सभा आयोजित की गई, साथ ही पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा. का 110 वां जन्मदिवस त्याग-तप के साथ पंजाब सम्प्रदाय के बहुश्रुत पंडित, आगम मनीषी, कवि हृदय **श्री जयमुनिजी म.सा.** आदि ठाणा 6 के सान्निध्य में मनाया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 300 लोगों की उपस्थिति रही।

निफाड़ (महा.)– उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. का रविवार 02 जनवरी, 2020 को चौविहार प्रत्याख्यान के साथ समाधिमरण होने पर परम पूज्य आचार्य **श्री रामलाल जी म.सा.** की आज्ञानुवर्ती महासती **श्री उज्जवलाप्रभाजी म.सा.**, महासती **श्री प्रतीतिश्री जी म.सा.**, महासती **श्री नवकारश्रीजी म.सा.** आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में जैन स्थानक, मामलेदार चौक, निफाड़ में श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। महासतियों ने बताया की इससे जिनशासन की अपरिमित क्षति हुई है, जो कभी पूर्ण नहीं होगी। संघ की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए चार लोगस्स का ध्यान किया गया।-अशोक कर्नावट, सचिव

नागपुर– उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. का रविवार 02 जनवरी, 2020 को चौविहार प्रत्याख्यान के साथ समाधिमरण होने पर रविवार, 05 जनवरी, 2020 को गुणानुवाद सभा का आयोजन ''वर्धमान भवन'' में विराजित आचार्यप्रवर **श्री पार्श्वचंदजी म.सा.** के आज्ञानुवर्ती तत्त्वज्ञानी श्रद्धेय **श्री सुमतिमुनिजी म.सा.** आदि ठाणा एवं प्लॉट नं. 35, वर्धमान नगर में विराजित तपस्वी पूज्य **श्री कानमुनिजी म.सा.** की सुशिष्या वर्धमान आयंबिल तप आराधिका महासतीजी **श्री सुशीलाकंवरजी म.सा.** की आज्ञानुवर्तिनी तपस्वी महासती **श्री रुचिताकंवरजी म.सा.** आदि ठाणा 4 के संयुक्त सान्निध्य में किया गया। प्रवचन में मुनिश्री ने सारगर्भित उद्‌बोधन में फरमाया कि- ''तीर्थंकरों की देशना श्रवण करने मात्र से तथा गुरु भगवन्तों के मुखारविन्द से जिनवाणी का श्रवण मात्र से भी अनेकों भव्य आत्मा मोक्ष की प्राप्ति कर सकती है। आत्मा अजर-अमर है, पहले कहीं और थी, आज यहाँ हैं, भविष्य में कहीं और होगी। जीवन शाश्वत है तो समाप्त होता ही नहीं, जीव कहीं से आया था और कहीं चला गया। जीव कभी पराया नहीं होता अजीव कभी अपना नहीं होता।'' विराजित संत-मुनिराज एवं महासती मण्डल ने उपाध्यायप्रवर के संयमी जीवन पर प्रकाश डाला। सभा में श्री दिनेशजी बेताला, श्री गौतमजी सिंघी तथा श्री महेन्द्रजी कटारिया ने अपनी

भावांजलि अर्पित की। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के उपसभापति, अध्यक्ष, महामंत्री, उपाध्यक्ष, कोषाध्यक्ष आदि पदाधिकारियों के साथ लगभग 200 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने दो-दो सामायिक की आराधना की।

बैंगलुरु– उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. का रविवार 02 जनवरी, 2020 को चौविहार प्रत्याख्यान के साथ समाधिमरण होने पर श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ ट्रस्ट-बैंगलुरु के संयुक्त तत्त्वावधान में राजाजीनगर स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में गुणानुवाद सभा आयोजित की गई। संघमंत्री श्री गौतमचन्दजी ओस्तवाल ने उपाध्यायप्रवर के समग्र जीवन की प्रेरक झांकी प्रस्तुत की। अन्य वक्ताओं में श्री चेतनप्रकाश जी डूंगरवाल, श्री सज्जनराजजी मेहता, श्री विनोदजी गुन्देचा, श्री सुनीलजी दलाल, श्री ज्ञानचन्दजी लोढ़ा, श्री भंवरलालजी चोरडिया ने भी उपाध्यायप्रवर का गुणगान कर श्रद्धाभिव्यक्ति दी।

-गौतमचन्द ओस्तवाल, मंत्री

इन्दौर– उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. का रविवार 02 जनवरी, 2020 को चौविहार प्रत्याख्यान के साथ समाधिमरण होने पर श्री मध्यप्रदेश जैन स्वाध्याय संघ, श्री महावीर जैन स्वाध्याय शाला परिवार एवं इन्दौर संघ की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा गया कि जब उपाध्यायश्री का इन्दौर में पर्दापण हुआ था तब उपाध्यायश्री ने आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. की प्रेरणा से वर्ष 1978 में स्थापित श्री मध्यप्रदेश जैन स्वाध्याय संघ एवं श्री महावीर जैन स्वाध्याय शाला की गतिविधियों के प्रति प्रमोदभाव व्यक्त किया था। उपाध्याय श्री ने जिनशासन की महती प्रभावना की, स्वभाव से सरल मिलनसार, दृढ़धर्मी एवं जिनशासन रसिक थे। ऐसे महापुरुष के देवलोकगमन से जिनशासन की अपूरणीय क्षति हुई है।

-अशोक मण्डलिक, महामंत्री

नदबई– उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. का रविवार 02 जनवरी, 2020 को चौविहार प्रत्याख्यान के साथ समाधिमरण होने पर जैन स्थानक-नदबई में 07 जनवरी, 2020 को प्रातः गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। उपाध्यायप्रवर के संयमी जीवन पर प्रकाश डाला गया तथा नवकार मंत्र का जाप, मान-चालीसा, मान गुणाष्टक एवं भजन के कार्यक्रम के साथ चार लोगस्स का ध्यान किया गया। कार्यक्रम में अच्छी उपस्थिति रहीं।-नरेशचन्द्र जैन, मंत्री

बालोतरा– उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. का रविवार 02 जनवरी, 2020 को चौविहार प्रत्याख्यान के साथ समाधिमरण होने पर श्री वर्धमान जैन स्थानकवासी संस्थान द्वारा स्थानक भवन में श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई। संघमंत्री श्री ओम बांठिया ने उपाध्यायप्रवर का जीवन परिचय देते हुए बताया कि उनके 56 वर्षो के संयम जीवन में सहजता, सरलता, सौम्यता एवं गुणों के प्रति अनुपम भाव देखने को मिलते थे। उनका जीवन शांत-दांत-गंभीर होने के साथ ही पूरे जिनशासन में उन्होंने अपने संयम पर्याय में हजारों श्रावक-श्राविकाओं को धर्म के प्रति प्रेरित कर

सामायिक स्वाध्याय से जोड़ा। सभा में पूर्व मंत्री श्री गौतम एम. तातेड़, महिला मण्डल की अध्यक्षा श्रीमती सुमनदेवीजी हुड़िया ने उपाध्यायप्रवर के प्रति श्रद्धा समर्पित की। ज्ञानगच्छ के संत-मुनिराज एवं महासती-मण्डल द्वारा भी उपाध्यायप्रवर के संयमी जीवन पर प्रकाश डाला गया।

भरतपुर– उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. का रविवार 02 जनवरी, 2020 को चौविहार प्रत्याख्यान के साथ समाधिमरण होने पर दिनांक 05 जनवरी, 2020 को महावीर भवन, भरतपुर में दोपहर 4.00 बजे गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। सभा में संघ के पदाधिकारी, सदस्यगण एवं अनेक श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। उपाध्याय श्री के अनेक गुणों का व्याख्यान किया गया। उनके जीवन की सरलता, सजगता, सादगी की महिमा की प्रशंसा के साथ उनकी विनम्रता, उच्च व्यक्तित्व की विवेचना भी की गई।-राहूल जैन, भरतपुर

नसीराबाद– उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. का रविवार 02 जनवरी, 2020 को चौविहार प्रत्याख्यान के साथ समाधिमरण होने पर सुश्रावक श्री ताराचन्दजी मुणोत सहित सभी श्रावक-श्राविकाओं ने उपाध्यायप्रवर के गुणानुवाद कर श्रद्धा समर्पित की।

परम पूज्य आचार्यप्रवर का पाली से मध्यवर्ती ग्राम–नगरों को पावन करते हुए पीपाड़शहर में मंगल पदार्पण

प्रतिकूलता में प्रसन्नता, अनुकूलता में साधना-आराधना में रमण करने वाले आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, ज्ञान-सुधाकर, दिव्य दिवाकर, गुण रत्नाकर, सामायिक-शीलव्रत-रात्रिभोजन त्याग-व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव, विमलतम जीवन की विरल विभूति परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म. सा., सरस व्याख्यानी, महान् अध्यवसायी, श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 8 के विचरण विहार का क्रम चातुर्मासिक स्थल पाली से पुण्य धरा पीपाड़ की ओर स्वास्थ्य की पर्याप्त समीचीनता के अभाव में भी निर्बाध प्रवाहमान रहा। ''हिम्मत रखने वालों की हार नहीं होती'' वाली पंक्ति को दृढ़ मनोबली पूज्य आचार्य भगवंत ने चरितार्थ कर दिखाया।

विगत मासांत में विचरण विहार फरमाते हुए दृढ़धर्मी पूज्य गुरुदेव 25 नवम्बर को विश्नोईजी के बेरा से पावन श्री चरण आगे बढ़ाते हुए चाड़ों की ढ़ाणी पधार आये। 26 नवम्बर को बाणोरा की ढाणी में श्रद्धास्पद पूज्य प्रवर का विराजना हुआ। यहाँ श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा. का पाठशाला में विनय पर उद्बोधन हुआ। 27 नवम्बर को श्री उदारामजी चौकीदार का मकान पूज्यश्री के पावन पदरज का स्पर्श पाकर धन्य हुआ। 28 को दूदिया गांव में पूज्य चारित्रमूर्ति के पावन पादयुग्म सुशोभित हुए। पाली से विहार कर श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. व श्रद्धेय श्री दीपेशमुनिजी म.सा. सोजत रोड़ क्षेत्र को फरसने की भावना से ग्रामानुग्राम होते हुए पूज्य आराध्य देव की चरण सन्निधि में दर्शनार्थ पधारे। यहाँ भी विद्यालय में श्रद्धेय श्री

विनम्रमुनिजी म.सा. का व्यसनमुक्त जीवन पर उद्‌बोधन हुआ। 29 नवम्बर को श्री मनोहरसिंहजी राजपूत के खेत में बने एक कक्ष में रात्रि साधना करने का प्रसंग बना। दूरदर्शी पूज्यवर्य ने स्थान की न्यूनता को ध्यान में रखते हुए श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री रविन्द्रमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री गुणवंतमुनिजी म.सा. को अग्रिम स्थान पर रत्नत्रय की आराधना करने का संकेत फरमाया। 30 नवम्बर को मण्डली दर्जियान क्षेत्र में प्याऊ जैसे सीमित स्थल में करुणा निधान पूज्य गुरुदेव प्रमोद भाव से आत्मलीन हो साधना-आराधना में रत रहे।

01 दिसम्बर को झींतड़ा गांव की सौभाग्यशालिता से संघनायक वहाँ विराजे। पूज्यश्री की सेवा में यहाँ कोयम्बटूर संघ विनति भाव लेकर उपस्थित हुआ। 02 दिसम्बर को चांदलाई की धरा पर प्रशांत विभूति पूज्यपाद का विराजना हुआ। यहाँ भी विद्यालय में श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा. का जैन धर्म के प्रमुख सिद्धान्तों पर उद्‌बोधन हुआ। 03 दिसम्बर को चांदलाई वोट स्थित प्याऊ में संयम सुमेरू पूज्य गुरुदेव ने स्वाध्याय साधना का क्रम बनाये रखा। 04 दिसम्बर को धुरासनी में बस स्टेण्ड के समीपस्थ धर्मशाला में अष्ट सम्पदा सम्पन्न आचार्य भगवन्त की पावन सन्निधि का लाभ ग्रामवासियों को मिला। विद्यालय में मंगल उद्‌बोधन से अध्ययनरत छात्र/छात्राएँ लाभान्वित हुए। 05 दिसम्बर को पोटलिया स्थित रामद्वारा में साधक शिरोमणि पूज्य गुरुदेव विराजे, यहाँ भटिण्डा संघ विनति लेकर पूज्य श्री की चरण सन्निधि में उपस्थित हुआ। 06 दिसम्बर को पूज्य आचार्य भगवन्त विहार का क्रम बनाये रखते हुए चांदासणी पधारे। यहाँ जोधपुर से सुश्राविका श्रीमती शांतीदेवीजी धर्मसहायिका श्री चंचलचन्द जी सेठिया के स्वर्गवास पर श्रद्धानिष्ठ श्री प्रेमचन्दजी, चंचलचन्दजी, धनपतचन्दजी, राजेन्द्रजी, महेन्द्रजी आदि समस्त सेठिया परिवारजन पूज्य गुरुदेव के मुखारविन्द से मंगल पाठ श्रवण करने पधारे। श्री अमरचन्दजी चौधरी ने प्रशान्तमना पूज्यप्रवर के चरणों में बीनावास क्षेत्र फरसने की विनति रखी। 07 दिसम्बर को पूज्य ज्ञानमहोदधि का चौपड़ा धरा पर मंगलमय पदार्पण हुआ। अयनावरम् संघ, चेन्नई चातुर्मास की भावना से तथा बाला गांव हरियाड़ा के श्रावक क्षेत्र में पधारने की विनति लेकर आये। चेन्नई से धर्मप्रेमी सुश्रावक श्री मोहनलालजी बाघमार के स्वर्गवास पर श्री अशोककुमारजी, सौरभकुमार जी पावन मुखारविन्द से मांगलिक श्रवण करने आये। 08 दिसम्बर को ज्योतिर्धर आचार्यप्रवर का लाणेरा की धरा पर कल्याणकारी शुभागमन हुआ। विहार का अधिकांश मार्ग कंकरीला- पैरों में चुभन का अहसास करवा रहा था फिर भी समताधारी आचार्य भगवन् बराबर नहीं उठ रहे पैरों से परीषह जन्य विषम पथ पर आगे बढ़ने में पूरी शक्ति लगाये रहे। 09 को लक्ष्मणनगर से पहले संयम की निर्मल साधना में सजगता रखने वाले गुरु भगवन् विश्नोई जी के गृह विराजे। बाहर से भी अनेक स्थानों से श्रद्धालु गुरुभक्तों का पावन श्री चरणों में दर्शनार्थ आना हुआ। यहाँ तक पाली संघ वालों ने विचरण विहार में सेवा का लाभ बराबर लिया। पीपाड़ संघ वाले भी बीच-बीच में बराबर संभालते रहे। 10 दिसम्बर को हुणागांव से कुछ आगे सेवा में उपस्थित रहने वाले विश्नोई परिवार के

यहाँ जिनशासन के रक्षक पूज्य गुरुदेव का पधारना हुआ। विहार सेवा में पीपाड़, पाली व जोधपुर के प्रबुद्ध श्रावकगणों की सहभागिता रही। पीपाड़ संघ की युवा टीम पदाधिकारियों के निर्देशन में तत्परता से उत्साहपूर्वक सेवा सन्निधि में अहोभाव से समुद्यत थी। इनकी अन्तर्निहित भावना को परोपकारी पूज्य गुरुदेव ने पीपाड़ की ओर विहार फरमाकर साकार कर दिया। हुबली से वीरभ्राता युवारत्न श्री संदीपबाबूजी सुराणा के स्वर्गवास पर वीरपिता श्री अमृतलालजी सुराणा मांगलिक श्रवण करने आये। 11 दिसम्बर को ओलवी की धरा को पदरज से पावन कर 12 दिसम्बर को मार्ग में स्थित विश्नोईयों की ढ़ाणी में युग प्रधान आचार्य भगवन् का पधारना हुआ। विश्नोई परिवारजनों ने पूज्य गुरुदेव एवं विहार सेवा में लाभ लेने साथ आये पीपाड़-पाली-विजयनगर-बैंगलोर कोसाणा-बंगारपेट के भाईयों की अच्छी सेवाभक्ति प्रमोदभाव से की। पूर्णिमा का प्रसंग होने से विजयनगर-बैंगलोर- बंगारपेट-जयपुर- हिण्डौन से पूनमिया श्रावक बन्धुओं का अपने आराध्य भगवन् की सेवा में आना हुआ। दिवस भर की साधना आराधना स्वास्थ्य समाधि के साथ गतिमान रही।

13 दिसम्बर को परमाराध्य पूज्य आचार्य भगवंत निर्लेप भाव से विहार फरमाकर सावर गांव पधारे। पीपाड़ संघ वालों की तो विहार सेवा अनवरत चल रही थी। आव, गोटण, बारणी, कोसाणा के श्रावकगण भी विहार सेवा में साथ थे। जिनकी श्रद्धाभक्ति अन्तर्हृदय से होती है वे दूरस्थ भी दर्शनार्थ आने का मानस बना लिया करते है। इसी क्रम में आज सवाईमाधोपुर के पूर्व विधायक धर्मप्रेमी श्री हंसराजजी शर्मा ने दर्शन-वंदन-सेवा का लाभ लिया। 14 दिसम्बर को धर्मोपदेशक पूज्य श्री गोदारा की ढाणी में विराजे। यहाँ तहाराबाद संघ के भाई/बहिन अच्छी संख्या में दर्शन-सेवा की भावना से उपस्थित हुए। उन्हें श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. ने जो सोजत रोड़ से पधारे थे, प्रेरणास्पद उद्बोधन फरमाया। 15 दिसम्बर को शांत-दांत पूज्य गुरुदेव के अलौकिक दर्शनों का लाभ साहू की ढाणी वालों को सुलभ हुआ। सौम्यता के निधान के दर्शनों से प्रभावित होकर यहाँ के 5 दम्पत्तियों ने आजीवन शीलव्रत के खंध लिये। 16 दिसम्बर को कापरड़ा धार्मिक क्षेत्र से लगभग 1 किमी. आगे एक चौधरी भाई के यहाँ पूज्यवर्य का पधारना व विराजना हुआ। 17 दिसम्बर को बोयल की धरा पर पूज्य गुरुदेव के पावन चरण सुशोभित हुए। यहाँ पाली संघ उपकारी पूज्य गुरुदेव के चरणों में कृतज्ञता के भाव निवेदन करने के साथ प्रवास समय में किसी भी प्रकार की अविनय आशातना हो गई हो तो मन-वचन-काया से क्षमापना करने आये। 18 दिसम्बर को मार्गस्थ स्थित प्याऊ पर संत भगवंतों का विराजना हुआ। 19 दिसम्बर को श्री भीकारामजी के बेरे पर पूज्यप्रवर विराजे। यहाँ भोपालगढ़ संघ क्षेत्र फरसने, आने वाले प्रसंगों का लाभ मिले इस भावना से पूज्य दयानिधि की सेवा में आया। सायं समय पूर्व श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री कल्पेशमुनिजी म.सा. आराध्य गुरुदेव की चरण सन्निधि में पाली से विहार फरमाकर पधारे। 20 दिसम्बर को पीपाड़ सिटी से बाहर स्थित श्री द्वारकादासजी धूत के परिसर में विराजकर रात्रि साधना की। 21 दिसम्बर को श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत

सामायिक-स्वाध्याय भवन में लगभग 9.00 बजे ज्ञान क्रिया के बेजोड़ संगम पीपाड़ की धरा में जन्में महापुरुष का अच्छी जनमेदिनी व जयघोष के उद्घोष के साथ कल्याणकारी मंगलमय पावन पदार्पण हुआ। रत्नसंघ के सातवें व आठवें पट्टधर पुण्य धरा पीपाड़ की देन है। भजन की पंक्तिया भी है-

''माटी है पीपाड़ की चंदन, जन्मे दो–दो रघुनंदन।
करते हैं हम सब अभिनन्दन, स्वीकारो गुरुवर वंदन।।''

परम श्रद्धेय, परमाराध्य पूज्य आचार्य भगवन्त ने चातुर्मास समाप्ति से एक माह पहले ही मानस बना लिया था कि स्वास्थ्य की अनुकूलता के साथ पाली से विहार हो। इसके लिए नित्य स्थानक परिसर में कुछ घूमने का क्रम प्रारम्भ किया। दो-तीन दिन साता रही, फिर असाता वेदनीय के उदय से विराम लग गया। स्वस्थता की अनुभूति होते ही फिर घूमने पधारने लगे। लेकिन घूमने का क्रम बराबर बन नहीं पाया। चातुर्मास समापन के बाद 13 नवम्बर को प्रथम विहार कर महावीर नगर पधार कर एक सप्ताह विराजकर वीतरागवाणी का वर्षण किया। पूज्य गुरुदेव प्रायः सर्दी में विहार कम करते है। हर बदि दशमी का दिन भी एकान्त साधना आराधना के लिये नियत रहता है। फिर भी पूज्य श्री ने इस बार 21 नवम्बर बदि दशमी की अखण्ड मौन साधना के दिन को पाली से विहार करने के लिये चुना। विहार का क्रम अनवरत 31 दिन तक बनाये रखने का उदाहरण पहली बार देखने में आया। विहार में जैसी आगे के स्थान की उपलब्धता थी, उस अनुसार कभी 2 किमी., कभी 2.5 किमी., 3 किमी., 3.5 किमी व 4 किमी. तक का विहार शनैः शनैः पावन श्री चरण बढ़ाते हुए बीच-बीच में विराम लेते हुए गंतव्य तक पधारने में जो प्रबलतम पुरुषार्थ का इतिहास स्थापित किया वह चिरस्मरणीय रहेगा। विगत वर्ष रणसी गांव में विराजने के समय भगवन् ने फरमाया था कि-''अब तक पैरों ने मुझे चलाया है, अब मैं इन्हीं शून्यवत् पैरों को चलाऊँगा।'' असीम आत्मबल के धनी ने पाली से पीपाड़ पधार कर अपने उक्त कथन को सत्य घटित कर दिखाया।

महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. व सभी आज्ञानुवर्ती संतों ने पूज्य गुरुदेव को विहार समय समाधि रहे इसका पूरा उपयोग रखा। 31 दिवसीय विहार में 10 से अधिक ऐसे स्थानों पर विराजना हुआ- जहाँ एक दो या चार घर थे। ऐसे में आहार पानी की गवेषणा के लिये 2 से 3 किमी. तक विहार के बाद भी जाना हुआ तब भी प्रसन्नता, उत्साह यथावत रहा। आवासीय स्थल की न्यूनता के कारण विहार कर जाना हुआ या चरणों में सिकुड़कर रात्रि साधना का जब भी अवसर आया तब सहर्ष प्रमोदभाव से शिरोधार्य कर गुरु कृपा जान स्वीकार किया। मुनिवृंद ने अनेक परीषहों में भी धैर्यता-सामंजस्यता, सौहार्दता, आज्ञाकारिता, सेवा प्रधानता का अभीष्ट लक्ष्य रखा।

वीर पिता श्री इंदरचन्दजी गांधी जोधपुर ने पाली से पीपाड़ तक विहार सेवा का संवर आराधना के साथ पूज्य गुरुदेव की पावन चरण सन्निधि का लाभ लिया। वीर भ्राता श्री यशजी जैन ने भी सप्ताह भर विहार सेवा का आनन्द लिया। कोसाणा

संघ के प्रबुद्ध श्रावकगण 29 नवम्बर से अनवरत विहार सेवा के साथ रात्रिकालीन प्रवास में भी सेवा सन्निधि में रहे। श्री भागचन्दजी मेहता-जोधपुर व उनके परिवारजनों की समय-समय पर विहार सेवा में सहभागिता रही। शासन सेवा समिति के सदस्य श्री नौरतनमलजी मेहता-जोधपुर की भक्ति बेजोड़ है। वे सप्ताह में दो बार अवश्य आकर दर्शन-सेवा का लाभ लेने का लक्ष्य इस मारवाड़ क्षेत्र में पधारने के समय से बराबर रखे हुए है। गुरुभक्त श्री हस्तीमलजी गोलेच्छा-ब्यावर 5-6 घण्टे की यात्रा करके भी हर 5-6 दिन के अन्तराल में आराध्य धर्माचार्य की चरण सन्निधि में दर्शन-वंदन-सेवा का लाभ लेकर धन्यता का अनुभव करते हैं। रत्नसंघ में ऐसे श्रद्धावान-ऊर्जावान श्रावकों की अखूट सम्पदा है, इस पर संघ को नाज है। इसी शृंखला में उदारमना श्रेष्ठिवर्य श्री पृथ्वीराजजी कवाड़ के पुत्ररत्न श्री प्रेमकुमारजी कवाड़ पूज्य आचार्य भगवन्त के पीपाड़ की ओर विहार फरमाने के समाचार श्रवण कर 16 दिसम्बर से ही पावन चरण सन्निधि का लाभ लेने पीपाड़ आ चुके है। वीर पिता श्री दलीचंदजी कवाड़ पारिवारिक कारणों से नहीं आ पाये, पर उनका मन भगवन् की भक्ति में है। गुप्त व परोक्ष में अन्तर्हृदय से ऐसे ही अनेक श्रद्धालुओं की रत्नसंघ में अमूल्य निधि है।

अब मुख्य बिन्दु पर आ जाये, 21 दिसम्बर को व्याख्यात्री महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 गुलाबपुरा चातुर्मास सम्पन्न कर ग्रामानुग्राम फरसते हुए पूज्य आराध्य गुरुदेव की पावन सन्निधि में पधारी। 21 दिसम्बर को भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक का पावन प्रसंग था। इस अवसर पर श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा. व श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा. ने राग-द्वेष-अज्ञानता-अहंकार-संगति पर प्रवचन हुआ। भगवान पार्श्वनाथ व कमठ के जीव के अनेक भवों के मुख्य मुख्य प्रसंगों के जीवन वृतांत से अवगत करवाया। 22 दिसम्बर को भगवान पार्श्वनाथ के दीक्षा कल्याणक पर महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. व श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा. का विशेष प्रवचन हुआ। आज से ही दोपहर समय दशवैकालिक सूत्र की वाचना प्रारम्भ हुई। महान् अध्यवसायी मुनिश्री सरस शैली में भावार्थ-शब्दार्थ-गूढ़ार्थ का सुन्दर विवेचन कर रहे है। बैंगलोर से हर साल की भांति इस वर्ष भी श्री नन्दकिशोरजी दुधेड़िया का समस्त परिवार दर्शनार्थ आया एवं नवीन त्याग व नियम ग्रहण किये। 24 दिसम्बर को सवाईमाधोपुर से बजरिया संघ चातुर्मास की विनति लेकर संघ शिरोमणि की सेवा में उपस्थित हुआ। संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया ने पूज्य आचार्य भगवंत की सेवा सन्निधि का लाभ लिया।

परमाराध्य पूज्य आचार्य भगवंत के पुण्य धरा पीपाड़ में विराजने से धर्माराधना का अच्छा प्रसंग बना हुआ है। प्रार्थना-प्रवचन-आगमवाचनी के समय प्रमोदजन्य उपस्थिति रहती है। संवर आराधना श्रद्धालु भाई/बहिन नियमित कर रहे हैं। दर्शनार्थ आने वालों का क्रम अनवरत बना हुआ है। पीपाड़ संघ में उत्साह व प्रमोदमय वातावरण है। संघ की आतिथेय सत्कार वाली भावना प्रशंसनीय है।

-जगदीश जैन

आचार्य श्री हस्ती दीक्षा शताब्दी वर्ष (2020–21)

(माघ शुक्ला द्वितीया, 26 जनवरी 2020 से माघ शुक्ला द्वितीया, 13 फरवरी 2021 तक)

सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, अध्यात्म योगी, इतिहास मार्तण्ड, परमश्रद्धेय आचार्य भगवन्त 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के दीक्षा शताब्दी वर्ष को पूरे भारत वर्ष में अटूट श्रद्धा, भक्ति सेवा व उत्साह के साथ मनाये जाने हेतु संघ द्वारा निर्णय लिया गया है। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं समस्त सहयोगी संस्थायें मिलकर संयुक्त रूप से दीक्षा शताब्दी वर्ष में आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. से संबंधित पावन दिवसों को एवं संघ के कुछ महत्वपूर्ण दिवसों को भी उत्साह के साथ विशेष रूप से मनायेगी। ये दिवस इस प्रकार है-

आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के मुख्य पावन दिवस

माघ शुक्ला 2, रविवार, 26 जनवरी 2020
दीक्षा दिवस शताब्दी वर्ष प्रारम्भ
सामायिक दिवस

वैशाख शुक्ला 3, रविवार, 26 अप्रेल 2020
आचार्य पदारोहण दिवस
स्वाध्याय दिवस

वैशाख शुक्ला 8, शुक्रवार, 01 मई 2020
29वां स्मृति दिवस
सामूहिक प्रार्थना दिवस

पौष शुक्ला 14, बुधवार, 27 जनवरी 2021
जन्म दिवस-**प्रतिक्रमण दिवस**
(आवश्यक सूत्र पर परीक्षा आयोजन)

माघ शुक्ला 2, शनिवार, 13 फरवरी 2021
दीक्षा दिवस शताब्दी वर्ष समापन
सामायिक दिवस

संघ एवं संघीय संस्थाओं के मुख्य दिवस

24 सितम्बर 2020, गुरुवार
श्राविका गौरव दिवस
संस्कार बोध दिवस

17 नवम्बर 2020, मंगलवार
संघ समर्पण दिवस
संकल्प दिवस

21 नवम्बर 2020, शनिवार
युवा शक्ति दिवस
व्यसन मुक्ति दिवस

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के विशेष कार्यक्रम

- आचार्य श्री हस्ती व्याख्यान माला का देश के विभिन्न शहरों में आयोजन।
- जिनवाणी में प्रतिमाह आचार्य श्री हस्ती के व्यक्तित्व व कृतित्व पर लेख।
- ''जैन जीवन शैली'' पर जिनवाणी विशेषांक।

स्वाध्याय संघ के विशेष कार्यक्रम

- स्वाध्याय प्रवृति का 75वां वर्ष भी हर्ष व उल्लास के साथ इसी वर्ष मनाया जायेगा।
- 75 नये स्वाध्यायी तैयार करना।
- 175 क्षेत्रों में पर्युषण पर्वाराधन।
- वृहद् स्वाध्यायी सम्मेलन का आयोजन।
- आचार्य श्री हस्ती द्वारा रचित पुस्तकों पर प्रत्येक माह स्वाध्यायियों के बीच परीक्षा का आयोजन।
- ''स्वाध्यायी-मंजुषा'' पुस्तक का पुनः प्रकाशन।

शिक्षण बोर्ड के विशेष कार्यक्रम

- आचार्य श्री हस्ती पर प्रश्नोत्तरी पुस्तक का प्रकाशन।

- आचार्य श्री हस्ती के व्यक्तित्व व कृतित्व पर जुलाई 2020 व जनवरी 2021 में आयोजित परीक्षाओं में कम से कम 10 अंकों का प्रश्न पत्र रखा जायेगा।
- प्रतिमाह आचार्य श्री हस्ती के व्यक्तित्व व कृतित्व पर रत्न संघ ऐप के माध्यम से ऑनलाईन परीक्षाओं का आयोजन।

संस्कार केन्द्र के विशेष कार्यक्रम

- अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्राविका मण्डल व युवक परिषद की सभी शाखाओं व सम्पर्क सूत्रों वाले स्थानों पर संस्कार केन्द्र खोलने का लक्ष्य।

सभी कार्यक्रमों की सफलता के लिए निम्नलिखित प्रयास सभी द्वारा करना–

- रत्न संघ के समस्त परिवारों की जानकारी लेकर रत्न संघ ऐप से जोड़ना।
- आचार्य श्री हस्ती के व्यक्तित्व व कृतित्व पर आधारित संगोष्ठी, भाषण प्रतियोगिता, निबन्ध, नाटक, भजन आदि कार्यक्रमों का आयोजन करना।
- अधिकतम प्रचार व प्रसार एवं व्यक्तिगत सम्पर्क करना।

जयपुर एवं जलगांव में 29 जनवरी को जैन भागवती दीक्षा

जिनशासन गौरव, व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक, परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने 02 नवम्बर, 2019 को पाली-मारवाड़ में साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. के सान्निध्य में अध्ययनरत विरक्ता बहिन सुश्री दीपिकाजी मुणोत सुपुत्री श्री कुन्दनमलजी मुणोत 'भोपालगढ़ वाले' हाल मुकाम जोधपुर की जैन भागवती दीक्षा माघ शुक्ला चतुर्थी, बुधवार 29 जनवरी, 2020 को प्रतापनगर-जयपुर में होने की घोषणा की। इसी तरह आचार्यप्रवर ने 11 नवम्बर, 2019 को सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभाजी जी म.सा. के सान्निध्य में अध्ययनरत विरक्ता बहिन सुश्री नीमिषाजी लुणावत सुपुत्री श्री सुनीलकुमारजी लुणावत, नरसिंगपुर की जैन भागवती दीक्षा माघ शुक्ला चतुर्थी, बुधवार 29 जनवरी, 2020 को जलगांव में होने की घोषणा की।-धनपत सेठिया, संघ महामंत्री

संक्षिप्त परिचय–मुमुक्षु बहिन सुश्री निमिषाजी लुणावत

जलगांव में दीक्षित होने वाली मुमुक्षु बहिन सुश्री निमिषाजी लुणावत मध्यप्रदेश के नरसिंहपुर की मूल निवासी है। प्रतिष्ठित लुणावत परिवार की आप लाडली है। वैराग्य का फूल तभी खिलता है जब बचपन में संस्कारों के बीज वपन होते है। आपके वीर पिता श्री सुनीलकुमारजी व माताजी श्रीमती सुषमाजी लुणावत को धन्य है, जिन्होंने बचपन से ही निमिषाजी को धर्म के संस्कार तो दिए ही, पर आज उन्हें संयम मार्ग में आगे बढ़ने हेतु अपने मोह का परित्याग कर सहर्ष आज्ञा प्रदान की। बी.एस.सी. जैसी व्यावहारिक शिक्षा के साथ आपने व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. के सान्निध्य में रहकर सुख-विपाक, दशवैकालिक, नंदीसूत्र, अनुत्तरोपपातिक दशा, उत्तराध्ययनसूत्र 1 से 24, 28 वाँ, 34 वाँ अध्ययन, पुच्छिंसुणं आदि आगमों के साथ ही कई थोकड़ें एवं स्तोत्र कठस्थ किए, वह आपकी प्रखर

प्रतिभा का परिचायक है। इनके गांव नरसिंहपुर तथा आसपास के क्षेत्र में श्वेताम्बर परम्परा की यह प्रथम दीक्षा होने जा रही है, जो अपने आपमें ऐतिहासिक है।

दीक्षा महोत्सव–कार्यक्रम जलगांव

वि.सं. 2076 माघ शुक्ला तृतीया, मंगलवार, 28 जनवरी, 2020

शोभा यात्रा

प्रातः 8.30 बजे बाफणा हाऊस, गांधी उद्यान के सामने से प्रारम्भ होकर स्वाध्याय भवन, गणपति नगर श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के श्री चरणों में पहुँचकर मांगलिक श्रवण करेंगी।

अभिनन्दन समारोह

वीर परिवार एवं दीक्षार्थी का

समय : दोपहर 2.00 बजे

स्थान : रतनलाल सी. बाफना स्वाध्याय भवन, गणपति नगर, सिद्धी व्यंकटेश मंदिर, आकाशवाणी चौक, जलगांव-425001 (महा.)

अध्यक्षता : श्री रतनलालजी बाफना-जलगांव, संयोजक-शासन सेवा समिति, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर (राज.)

मुख्य अतिथि : श्री अरूणभाई गुजराती-चौपड़ा
भूतपूर्व विधानसभा अध्यक्ष-महाराष्ट्र

विशिष्ट अतिथि : श्री मोफतराजजी मुणोत-मुम्बई, संयोजक, संघ-संरक्षक मण्डल, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर (राज.)

विशिष्ट अतिथि : श्री पी.शिखरमलजी सुराणा-चेन्नई, निवर्तमान अध्यक्ष अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर (राज.)

विशिष्ट अतिथि : श्री बुधमलजी बोहरा-चेन्नई, कार्याध्यक्ष अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर (राज.)

वि.सं. 2076 माघ शुक्ला चतुर्थी, बुधवार, 29 जनवरी, 2020

अभिनिष्क्रमण यात्रा

प्रातः 9.30 बजे वीर परिवार के अस्थायी निवास से प्रस्थान कर रतनलाल सी. बाफना स्वाध्याय भवन, गणपति नगर दीक्षा स्थल पर पहुँचेगी, जहाँ श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 2, विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 21 के पावन सान्निध्य में दीक्षा-महोत्सव कार्यक्रम प्रारम्भ होगा।

दीक्षा विधि शुभारम्भ

प्रातः 11.30 बजे लगभग श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. के मुखारविन्द से

संक्षिप्त परिचय–मुमुक्षु बहिन सुश्री दीपिकाजी मुणोत

मात्र 21 वर्ष की उम्र में संयम की दहलीज पर कदम रखने वाली जयपुर शहर में दीक्षित होने वाली मुमुक्षु बहिन सुश्री दीपिकाजी मुणोत सूर्यनगरी-जोधपुर की है। मूल भोपालगढ़ के मुणोत परिवार में जन्मी यह बालिका पहले से ही वीर परिवार

की है। इनकी दोनों भुआजी भी रत्नसंघ में पहले से ही दीक्षित है जो आज साध्वीप्रमुखा जी की सेवा में व्याख्यात्री महासती श्री सुमनलताजी म.सा. तथा महासती श्री पुष्पलता जी म.सा. के रूप में जिनशासन की महती प्रभावना कर रही है। बहन दीपिका पिछले नौ वर्षो से साध्वीप्रमुखाजी की सेवा में ज्ञान-ध्यान सीख रही है। इन्होंने दशवैकालिक, सुखविपाक, अनुत्तरोपपातिक, आवश्यक सूत्र, आचारांग 1 से 5 अध्ययन, उत्तराध्ययन सूत्र 1 से 24 व 28 वाँ अध्ययन, वीरस्तुति, मोक्षमार्ग, उववाई आदि आगमों के साथ ही कई थोकड़ों एवं स्तोत्रों को कण्ठस्थ किया है। अर्थात् जिस छोटी उम्र में आजके बच्चे टी.वी., मोबाइल में लगे रहते हे उस उम्र में आपने उन सबको छोड़ धर्म के मार्ग को चुना, यह प्रेरणादायी है। धन्य है आपकी दादीजी सूरजबाईजी, धन्य है आपके माता-पिता श्रीमती कमलेशजी-कुन्दनमलजी मुणोत तथा सभी पारिवारिक परिजन।

दीक्षा महोत्सव–कार्यक्रम जयपुर

वि.सं. 2076 माघ शुक्ला तृतीया, मंगलवार, 28 जनवरी, 2020

शोभा यात्रा

प्रातः 9.00 बजे 61/51, सेक्टर-6, श्री श्वेताम्बर जैन रत्न स्वाध्याय भवन के सामने, प्रतापनगर से प्रारम्भ होकर साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि प्रभृति महासतीवृन्द के श्री चरणों में मांगलिक श्रवण कर अभिनन्दन स्थल पर पहुँचेगी।

अभिनन्दन समारोह

वीर परिवार एवं दीक्षार्थी का

समय : दोपहर 11.30 बजे

स्थान : 68/एस-1, जागृति मार्ग, हल्दी घाटी गेट के पास, टोंक रोड़, सांगानेर-प्रतापनगर, जयपुर (राज.)

अध्यक्षता : न्यायमूर्ति श्री प्रकाश जी टाटिया, राष्ट्रीय अध्यक्ष, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर (राज.)

मुख्य अतिथि : माननीय श्री गुलाबचन्दजी कटारिया, नेता प्रतिपक्ष-राजस्थान विद्यानसभा, (पूर्व गृहमंत्री-राजस्थान सरकार)

विशिष्ट अतिथि : माननीय श्री रामचरणजी बोहरा सांसद, जयपुर शहर (राज.)

विशिष्ट अतिथि : माननीय श्री अशोकजी लाहोटी विधायक, सांगानेर-जयपुर विधानसभा क्षेत्र

वि.सं. 2076 माघ शुक्ला चतुर्थी, बुधवार, 29 जनवरी, 2020

अभिनिष्क्रमण यात्रा

प्रातः 8.15 बजे वीर परिवार के अस्थायी निवास से प्रस्थान कर दीक्षा स्थल पर पहुँचेगी, जहाँ साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि महासती

मण्डल के पावन सान्निध्य में दीक्षा-महोत्सव कार्यक्रम प्रारम्भ होगा।

दीक्षा विधि शुभारम्भ

प्रातः 11.30 बजे से साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. के मुखारविन्द से

दीक्षार्थी बहिनों का दर्शन–वन्दन का कार्यक्रम

जलगांव एवं जयपुर में दीक्षा ग्रहण करने वाली विरक्ता बहिन सुश्री निमिषा जी लुणावत एवं सुश्री दीपिकाजी मुणोत को आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर सहित मुनि-मण्डल एवं महासती मण्डल के दर्शन-वन्दन एवं मांगलिक श्रवण करने के लिए अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा दीक्षा समिति के तत्त्वावधान में दिनांक 18 दिसम्बर, 2019 से 31 दिसम्बर 2019 तक दर्शन-वंदन का कार्यक्रम रखा गया। सर्वप्रथम 20 दिसम्बर, 2019 को चेन्नई में व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा, होसपेट में 22 दिसम्बर, 2019 को व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा, 23 दिसम्बर, 2019 को रामनगर में व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा, 24 दिसम्बर, 2019 को वाघली (महा.) सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा, 25 दिसम्बर, 2019 को जलगांव में व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म. सा. आदि ठाणा, होलनांथा में व्याख्यात्री महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा.आदि ठाणा, वरूल गांव में विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन किए। 26 दिसम्बर, 2019 को विरक्ता बहिनें निझर में श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. के दर्शन-वन्दन हेतु उपस्थित हुई। 27 दिसम्बर, 2019 को अहमदाबाद में सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म. सा. की सेवा में विरक्ता बहिनों ने पहुँच कर दर्शन-वन्दन का लाभ प्राप्त किया। 28 दिसम्बर, 2019 को जयपुर में साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा, व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा, व्याख्यात्री महासती श्री स्नेहलताजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन किए। 28 दिसम्बर, 2019 को सायंकाल अलवर में व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन हेतु पहुँचे। 29 दिसम्बर, 2019 को अजमेर में विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. आदि ठाणा, विजयनगर में व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवरजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वंदन कर जोधपुर पहुँचे। 30 दिसम्बर, 2019 को विरक्ता बहिनों ने उपाध्यायप्रवर पण्डितरत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. की सेवा में पहुँचकर दर्शन-वन्दनकर मांगलिक श्रवण की। इसी दिन प्रतापनगर-जोधपुर में श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा., दिग्विजयनगर में व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन किये।

वर्ष 2019 के अन्तिम दिवस 31 दिसम्बर को विरक्ता बहिनों ने जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा की सेवा में पीपाड़ शहर पहुँचकर दर्शन-वन्दन का लाभ प्राप्त कर आचार्य भगवन्त से मांगलिक श्रवण की। भोपाल, नागपुर, चेन्नई,

हुबली, होसपेट, बाघली, जलगांव, होलनांथा, वरूलगांव, शिरपुर, निझर, अहमदाबाद, जयपुर, अलवर, दूदू, अजमेर, विजयनगर, जोधपुर, पीपाड़शहर आदि श्रीसंघों ने विरक्ता बहिनों के दर्शनार्थ पधारने पर उत्साहपूर्वक आतिथ्य सत्कार का लाभ तो लिया ही, सभी संघों द्वारा विरक्ता बहिनों का अभिनन्दन एवं खोल भराई का कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। विभिन्न स्थानों पर विरक्ता बहिनों का शोभायात्रा भी निकाली गई। जोधपुर शहर में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा विरक्ता बहिनों के अभिनन्दन के साथ शोभायात्रा का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें संघ सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। विरक्ता बहिन सुश्री दीपिकाजी मुणोत के निवास स्थान से प्रारम्भ हुई शोभायात्रा के पश्चात् उपाध्यायप्रवर के सान्निध्य में प्रवचन सभा में अभिनन्दन कार्यक्रम रखा गया। इसी प्रकार पीपाड़ शहर में विरक्ता बहिनों की शोभायात्रा का कार्यक्रम एवं अभिनन्दन समारोह रखा गया। दोनों बहिनों ने आचार्यप्रवर, उपाध्याय प्रवर सहित सभी मुनि-मण्डल एवं महासती-मण्डल से मांगलिक श्रवण की। दर्शन-वन्दन कार्यक्रम में दोनों विरक्ता बहिनों ने सभी स्थानों पर अपने संयम प्रेरणा के उद्गार व्यक्त करते हुए सभी संघ सदस्यों को दीक्षा में पधार कर आशीर्वाद हेतु निवेदन किया। बहिन निमिषा ने पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. से मांगलिक लेकर अपने अन्तर्मन की भावना भजन के माध्यम से गुरुचरणों में व्यक्त की, जो इस प्रकार है-

गुरूदेव के श्री चरणों में, अर्पण जीवन सारा है।
आज्ञा गुरू की प्राण हमारे, गुरू पथ हमको प्यारा है।।

विनय भावना बड़े निरन्तर सहज, सरल, मृदु जीवन हो।
सेवा का अवसर आते ही, हर्षित अन्तर से मन हो।
अनुशासन और मर्यादा में, चलने का प्रण धारा है।।
गुरूदेव के श्री चरणों में.....।।1।।

आत्मदृष्टि हो प्रतिपल जागृत, अप्रमत्त हर क्षण होवे,
यतना से ही कार्य करे सब, भाव अहिंसा नित होवे।
समिति गुप्ति में बढ़े लीनता, सिद्धि साध्य हमारा है।
गुरूदेव के श्री चरणों में.....।।2।।

गुरू चरणों में करे प्रतिज्ञा, शासन को विकसायेंगे,
एक भाव से हिल-मिल हम सब, संघ ध्वजा फहराऐंगे।
निर्मल संयम आराधन का, उच्च लक्ष्य स्वीकारा है।।
गुरूदेव के श्री चरणों में.....।।3।।

इस दर्शन वन्दन यात्रा के कार्यक्रम में दीक्षा समिति के उपाध्यक्ष श्री महेन्द्रजी कटारिया-नागपुर, मंत्री श्री महावीरजी मकाणा-ब्यावर, प्रतापनगर, जयपुर से श्रीमती कुसुमजी धर्मपत्नी श्री राकेशजी जैन, श्रीमती योगिताजी धर्मपत्नी श्री

सुशीलकुमारजी जैन, श्री प्रकाशजी सालेचा-जोधपुर, शिरपुर के श्री सागरजी सेठिया, श्री संदीपजी मुणोत एवं श्री निखिलजी साण्डेचा की समर्पित सेवाएँ प्राप्त हुई। इस कार्यक्रम में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सहयोग सहकार प्रदान करने वाले सभी श्रावक-श्राविकाओं का हार्दिक आभार।-प्रकाश सालेचा

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल पोरवाल संभाग का क्षेत्रिय सम्मेलन सम्पन्न

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल के पोरवाल संभाग का क्षेत्रीय सम्मेलन रविवार, 15 दिसम्बर, 2019 को सवाईमाधोपुर में सम्पन्न हुआ। श्राविका वर्ग का आध्यात्मिक, धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, चारित्रिक व वैयक्तिक समुन्नयन, राष्ट्रीय कार्यक्रम क्रियान्वयन, जिनशासन संघ प्रभावना, सुन्दर समाज, परिवार निर्माण, कर्तव्य, योगदान, आचार्य हस्ती दीक्षा शताब्दी वर्ष पर्यन्त, तप त्याग की पूर्व तैयारी, सामायिक-स्वाध्याय संगोष्ठी, आयंबिल, पौरषी की लड़ी, नमो पुरिसवरगंध-हत्थीणं ओपन बुक प्रतियोगिता में सहभागिता के उद्देश्य से इस सम्मेलन का आयोजन किया गया। समारोह की मुख्य अतिथि राष्ट्रीय परामर्शदाता श्रीमती पूर्णिमा जी लोढ़ा-जयपुर, अध्यक्षता राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्रीमती बीनाजी मेहता-जोधपुर, विशिष्ट अतिथि श्रीमती श्वेताजी कर्णावट-जोधपुर, श्रीमती विनिताजी कांकरिया-जोधपुर, श्रीमती विमलाजी जैन-जयपुर, श्रीमती उषाजी जैन-कोटा रही। गरिमामयी उपस्थिति सर्व श्रीमती विमलाजी जैन गोटेवाला, हेमलताजी जैन, सन्तराजी जैन पान वाले, मंजूजी जैन-सर्राफ, चमेलीजी जैन-सर्राफ, रूपाजी जैन, सन्तोषजी जैन-सर्राफ, चमेलीजी जैन-एण्डवा, प्रतिभाजी जैन व इन्द्राजी जैन की रही। वीरमाता श्रीमती चमेलीजी जैन-रामपुरा, चमेलीजी जैन-श्यामपुरा, प्रसन्नजी जैन-जरखोदा भी उपस्थित थी। मंगलाचरण एवं जिनशासन गान श्रीमती रेखाजी जैन, मधुजी जैन, मीनाजी जैन, मंजूजी जैन-बजरिया द्वारा तथा प्रस्तुति स्वागत गान श्रीमती सुरेखाजी जैन, संजूजी जैन, पदमाजी जैन-सवाईमाधोपुर ने प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि, अध्यक्ष, विशिष्ट अतिथि, गरिमामय उपस्थित श्राविकाओं, वीर माताओं का प्रतीक चिन्ह, ध्वजपट्टिका द्वारा बहुमान किया गया। श्राविकाओं की समाज में भूमिका, संघ समाज से अपेक्षा वाद-विवाद प्रतियोगिता में 15 सदस्याओं ने भाग लिया। धर्मस्थान में आकर सांसारिक बात नहीं करने के क्रम में कोटा मण्डल का प्रोग्राम, अलीगढ़ मण्डल की नाटिका सराहनीय रही। माननीय मुख्य अतिथि, अध्यक्ष, विशिष्ट अतिथि आदि ने जीवन उत्थान, बच्चों में सुसंस्कार, आपसी प्रेम, सेवा कार्यो से जुड़ने, जरूरतमंद को सहयोग, अहिंसा, साधना, सेवा व सद्गुणों से स्वयं को सजाने के लिए प्रेरित किया। 550 सदस्याओं द्वारा प्रार्थना, गुण विकास, धर्मस्थान में साधना, बच्चों को संस्कार केन्द्र भेजने व संघ सेवा हेतु संकल्प पत्र भरे गये। समूचे पोरवाल संभाग जिसमें कोटा, जयपुर, देई, चोरू, पचाला, कुस्तला, इन्द्रगढ़, सुमेरगंजमण्डी, अलीगढ़-रामपुरा, सूरवाल, चौथ का बरवाड़ा एवं सवाईमाधोपुर नगरपरिषद् क्षेत्र की जैन रत्न श्राविका मण्डल सदस्याओं ने उत्साह उमंग से भाग लिया। श्रीमती रजनीजी जैन गोटेवाला-

क्षेत्रीय प्रधान, श्रीमती मोहिनी जी जैन-आलनपुर-संयोजक, श्रीमती अरूणाजी जैन-अलीगढ़-सहसंयोजक के साथ पोरवाल संभाग की सभी अध्यक्ष, मंत्री व प्रतिनिधि सदस्याएँ एक माह से इस सम्मेलन की तैयारी में जुटी हुई थी। सम्मेलन सृजनात्मक चिन्तन, सबको साथ लेकर चलने की भावना, प्रबल पुरुषार्थ, सेवा भावना के फलस्वरूप सुव्यवस्थित, सुन्दर, गरिमामय, भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। प्रातःकाल महावीर नगर साधना भवन में नगर परिषद् क्षेत्रीय सामूहिक-सामायिक स्वाध्याय संगोष्ठी भी सम्पन्न हुई। मंच संचालन श्रीमती रजनीजी जैन गोटेवाला द्वारा किया गया, श्रीमती रेखाजी जैन एवं मनीषाजी जैन-बजरिया संचालन में सहयोगी रही।-धनसुरेश जैन

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन

प्रातःस्मरणीय, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. का दीक्षा शताब्दी वर्ष दिनाँक 26 जनवरी 2020 को प्रारम्भ हो रहा है। साथ ही श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर का हीरक जयन्ती वर्ष भी प्रारम्भ हो रहा है। इस शुभ अवसर पर श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। निबन्ध का विषय "**सामायिक एवं स्वाध्याय के प्रेरक आचार्य हस्ती**" रखा गया है। उक्त निबन्ध मौलिक, तथ्यात्मक तथा 1500 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिये। इस प्रतियोगिता में सभी आयु वर्ग के श्रावक-श्राविकाएँ भाग ले सकते हैं। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले को 1500 रुपये का, द्वितीय स्थान पाने वाले को 1100 रुपये का, तृतीय स्थान पाने वाले को 700 रुपये का एवं 10 प्रतिभागियों को 200 रुपये प्रत्येक को सांत्वना पुरस्कार दिया जायेगा। सभी प्रतिभागियों को अपने बैंक खाते की जानकारी साथ में भेजना अनिवार्य है। निबन्ध भिजवाने की अंतिम तिथि 10 **मार्च**, 2020 निर्धारित है। **सम्पर्क सूत्र**:– संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2, नेहरूपार्क, जोधपुर-342003 (राज.), फोनः-0291-2624891, मोबाइलः 94141-26279, 94625-43360, ईमेलः-swadhyaysanghjodhpur@gmail.com -सुभाष हुण्डीवाल, संयोजक

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमंत्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 75 से भी अधिक वर्षों से संत-सतियों के चातुर्मास से वंचित गांव/शहरों में पर्वाधिराज पर्युषण पर्व के पावन अवसर पर धर्माराधना हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान स्वाध्यायियों को बाहर गांव में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महत्ती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहां जैन संत-सतियों के चातुर्मास नहीं है, उन क्षेत्रों में स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष पर्युषण पर्व 15 से 22 अगस्त, 2020 तक रहेंगे। अतः देश-विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री अपने लेटरपैड पर आवेदन पत्र दिनांक

30 जून, 2020 तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करावें। आवेदन पत्र हेतु सम्पर्क सूत्रः-**श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ**, प्लॉट नं. 2, सामायिक स्वाध्याय भवन, नेहरू पार्क, सरदारपुरा, जोधपुर-342003 (राज.), फोनः 0291-2624891, 9414126279 (कार्यालय), 9460551096 (संयोजक), 9413844592 (सचिव), 9461026279 (पर्युषण संयोजक), 9462543360 (कार्यालय प्रभारी), **दक्षिण भारत हेतु सम्पर्क सूत्रः** नवरतन जी बाघमार-9444051065 (संयोजक), सुधीर जी सुराणा- 9381540004-सुनील संकलेचा, सचिव

अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र द्वारा विधि सहित मौखिक सामायिक सूत्र परीक्षा का आयोजन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, जोधपुर द्वारा जोधपुर क्षेत्र के समस्त दैनिक संस्कार केन्द्र/रविवारीय शिविर में अध्ययन करने वाले छात्रों के मूल्यांकन हेतु विधि सहित मौखिक सामायिक सूत्र परीक्षा का आयोजन दिनांक 08 दिसम्बर, 2019 को दोपहर 01.00 बजे से सामायिक स्वाध्याय भवन, नेहरू पार्क स्थानक में आयोजित किया गया। जिसमें लगभग 175 छात्रों ने परीक्षा में भाग लिया। जिसमें से 90 छात्रों ने 75 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करके मेरिट में स्थान प्राप्त किया। शेष बचे परीक्षार्थियों में से 55 छात्रों ने 50 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। अ.भा.श्री जैन रत्न संस्कार केन्द्र द्वारा मेरिट में स्थान पाने वाले छात्रों को प्रशस्ति पत्र के साथ 200 रुपये तक का पुरस्कार दिया जायेगा। इस परीक्षा में संस्कार केन्द्र के सभी पदाधिकारी उपस्थित थे।-राजेश भण्डारी, सचिव

श्राविका मण्डल, जोधपुर द्वारा शिविर का आयोजन

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर द्वारा परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पण्डितरत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. के पावन सान्निध्य में शक्तिनगर स्थानक में 12 से 16 दिसम्बर, 2019 तक पंचदिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें 75 श्राविकाओं ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। शिविर में प्रबुद्ध अध्यापकों द्वारा शिविरार्थियों को ज्ञानार्जन करवाने के साथ शिक्षण बोर्ड के पाठ्यक्रमानुसार कक्षा 1 से 8 तक अध्यापन करवाया गया।-सुमन सिंघवी, अध्यक्ष

अ. भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ को प्राप्त साभार

49000/- श्री विमलचंदजी जैन, सूरत, जीवदया हेतु।

5100/ श्री अमितजी बोहरा, श्रीमती सुरजकंवरजी बोहरा, ब्यावर, जीवदया हेतु।

2100/- श्री पवित्रजी तखतमलजी भण्डारी, जोधपुर, जीवदया हेतु।

1100/- श्री चंचलचंदजी, चन्द्रशेखरजी, योगिताजी, सुभाषजी, शोभाजी सेठिया एवं ममताजी भंसाली, जोधपुर, श्रीमती शांतिदेवीजी धर्मसहायिका श्री चंचलचंद जी सेठिया का स्वर्गगमन 02 दिसम्बर, 2019 को हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

2200/- श्रीमती चन्द्रकलाजी जैन, जोधपुर, जीव दया हेतु।

500/- श्रीमती सुशीलाजी मेहता धर्मसहायिका स्व. श्री कंवलराजजी मेहता, जोधपुर, जीवदया हेतु।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार

5100/- श्री उम्मेदचन्दजी, लालचन्दजी, नमोकारजी, मोहनलालजी जैन, बजरिया सवाईमाधोपुर, श्रावकरत्न श्री रामदयालजी जैन 'सर्राफ' की पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्रीमती कमलादेवीजी, नवरतनजी, अनिलजी, नीलमजी, नरेशजी भूरट, जलगांव, स्व. श्री डूंगरचन्दजी सुपुत्र स्व.श्री बालचन्दजी भूरट (कुचेरा वाले), जलगांव का दिनांक 15 दिसम्बर, 2019 को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

अ. भा. श्री जैन रत्न आ. शिक्षणबोर्ड को प्राप्त साभार

15000/- एस.आर. भण्डारी चेरिटेबल ट्रस्ट, चेन्नई, पुस्तक प्रकाशन हेतु सहयोग।

2200/- श्री दिलखुशराजजी जैन, गोरेगाँव-मुम्बई, नवम्बर-दिसम्बर-2019 हेतु सहयोगार्थ।

1100/- श्रीमती कमलादेवीजी, नवरतनजी, अनिलजी, नीलमजी, नरेशजी भूरट, जलगांव, स्व. श्री डूंगरचन्दजी सुपुत्र स्व.श्री बालचन्दजी भूरट (कुचेरा वाले), जलगांव का दिनांक 15 दिसम्बर, 2019 को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

अ.भा. श्री जैन रत्न आ. संस्कार केन्द्र को प्राप्त साभार

17000/- श्री प्रवीण कुमारजी, पदमा जी, मनोज जी, शैलेष जी, रक्षिता जी, सिद्धार्थ जी संकलेचा, कुम्भकोणम, चैन्नई, पूज्य मातुश्री श्रीमती सुशीला जी संकलेचा की पावन स्मृति में।

8500/- श्री नवरतनमलजी, पुनीतजी, कविशजी डागा, जोधपुर, सहायतार्थ।

4000/- श्री कानराजजी मेहता-श्रीमती पुष्पादेवीजी मेहता, पाली, सहायतार्थ।

1100/- श्रीमती कमलादेवीजी, नवरतनजी, अनिलजी, नीलमजी, नरेशजी भूरट, जलगांव, स्व. श्री डूंगरचन्दजी सुपुत्र स्व.श्री बालचन्दजी भूरट (कुचेरा वाले), जलगांव का दिनांक 15 दिसम्बर, 2019 को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

गजेन्द्रनिधि द्वारा आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

12000/- श्रीमती रतनकंवरजी सिंघवी, सरदारपुरा, जोधपुर, स्व. श्री रिखबचन्दजी सिंघवी की पुण्यतिथि पर उनकी पुण्यस्मृति में।

6000/- श्री विजयराजजी, विपीनजी बाफना, शाहपुर, जिला-ठाणा (महा.)।

नम्र निवेदन

हाल ही की जानकारी में कुछ ऐसे मामले आये हैं जिनमें अनजान लोग फोन करके संघ के पदाधिकारियों, विशिष्ट लोगों आदि का नाम लेकर सहायता करने को एकाउण्ट में पैसा डालने को कह रहे हैं। सहायता वास्तविकता, पात्रता देखकर करनी उचित होती है। प्रभावशाली लोगों का नाम लेकर आपकी भावनाओं से खेल कर कहीं कोई आपको नुकसान न पहुँचा दे। अतः बढ़ते साइबर क्राइम के माहौल में हम आपको जागरूक रहने की सलाह देते हैं। आप ऐसी किसी भी कॉल की जानकारी तुरन्त संघ के प्रधान कार्यालय को सूचित करें, ताकि वास्तविकता का पता लगाया जा सके।

-धनपत सेठिया, महामंत्री

आगामी पर्व

माघ कृष्णा 14	गुरुवार	23.01.2020	चतुर्दशी
माघ कृष्णा 30	शुक्रवार	24.01.2020	पक्खी पर्व
माघ शुक्ला 2	रविवार	26.01.2020	पुज्य गुरुदेव हस्तीमलजी म.सा. का 100 वां दीक्षा दिवस (शताब्दी वर्ष प्रारम्भ)
माघ शुक्ला 8	रविवार	02.02.2020	अष्टमी
माघ शुक्ला 14	शनिवार	08.02.2020	चतुर्दशी
फाल्गुन कृष्णा 8	रविवार	16.02.2020	अष्टमी
फाल्गुन कृष्णा 14	शनिवार	22.02.2020	चतुर्दशी
फाल्गुन कृष्णा 30	रविवार	23.02.2020	पक्खी पर्व

BOOK PACKETS CONTAINING PERIODICALS Value of Periodical From Rs.1/- to Rs.20/- For First 100 gms or part thereof Rs. 2/-

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक धनपत सेठिया द्वारा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, नेहरु पार्क, जोधपुर (राज.) से प्रकाशित, सम्पादक-प्रकाश सालेचा एवं इण्डियन मैप सर्विस, सेक्टर-जी, राममन्दिर के पास, शास्त्रीनगर, जोधपुर से मुद्रित

Contact No. 0291-2636763, 94610-26279 (WhatsApp)
Website- www.ratnasangh.com, Email : absjrhssangh@gmail.com

इस अंक का सौजन्य- गुरुभक्त संघनिष्ठ श्री कनकराज जी महेन्द्र जी कुम्भट-जोधपुर, मुम्बई